पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एलडब्लू/एनपी/318/2014-16

ओ३म्

शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-१८, अंक-३, सितम्बर, सन्-२०१५, सं०-२०७२ वि०, दयानन्दाब्द १९१, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११६; मूल्य : एक प्रति १.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर विशेष

जैसी वीरगति अभिमन्यु की हुई, उसके लिए वीर जन्मकाल से तरसते हैं!

पं.चमूपति शास्त्री की जादुई लेखनी से जयद्रथ वध की रोमांचक गाथा

संध्या का समय हो चुका था। दोनों वीरों श्रीकृष्ण और अर्जुन, ने ईश्वर आराधना की और इस नित्य कर्म से निवृत्त हो अपनी छावनी की ओर लौटे। वहाँ पहुँचते ही यह अशुभ समाचार मिला कि अभिमन्यु अब इस संसार में नहीं रहा। अर्जुन के हृदय पर मानो बिजली-सी गिरी। जब उसे बताया गया कि अभिमन्यु अकेला निःशस्त्र छः महारथियों से घिर गया था तो वह अपने शोकातुर हृदय को थाम न सका। "हाय! मेरे मरते लाल ने मुझे पुकारा होगा। पिता की ओर से उत्तर न पाकर जनक की निष्ठुरता का गहरा घाव मर रहे पुत्र को छाती में पैठ तो गया ही होगा। नहीं, वह वीर था वह मरते हुए रो नहीं सकता। पाण्डवदल उसकी सहायता को क्यों नहीं गया? जयद्रथ ने नाका बन्द कर रखा था? तो फिर लो! यदि कल सूर्यास्त से पूर्व जयद्रथ का वध न कर दूँ तो स्वयं जलती आग में प्रवेश कर जाऊँगा। हाँ! यदि जयद्रथ युद्ध से हट जाय या हमारी शरण में आ जाय तो उसका बचाव हो सकता है।" अर्जुन ने पुत्र-शोक का बुखार इस घोर प्रतिज्ञा के रूप में निकाला। उधर अन्तःपुर में सुभद्रा का हाल अत्यन्त बेहाल हो रहा था। श्रीकृष्ण उसको सान्त्वना देने गये तो वह फूट-फूटकर रोई। कृष्ण ने उसे दिलासा दिया। कहा- जो गति अभिमन्यु की हुई है उसके लिए तो हम सब जन्मकाल से तरसते हैं। ऐसे वीर की माता होकर तू विलाप कर रही है? तेरे पिता वीर! तेरे भाई बन्धु सब वीर! सारी सुसराल वीरों की! और फिर यह भीरुओं का-सा विलाप? अभिमन्यु के वध का बदला जयद्रथ के वध से लिया जायगा। अर्जुन प्रतिज्ञा कर चुका है और वह पूरी होकर रहेगी। अरी! देख तो! वह उत्तरा रो रही है। तू उसे दिलासा देगी या स्वयं रोयेगी? दो कुलों की इकट्ठी शपथ में जादू था। बदले की बात में जादू था। उत्तरा की अनाथता में जादू था। वासुदेव की भगिनी, अर्जुन की पत्नी सुभद्रा शोक छोड़ झट आशीर्वाद देने लगी- 'बेटा! तेरी वही गति हो जो यज्ञ करने वाले दानशील आत्मवित् ब्राह्मणों की होती है। जो यशस्वी ब्रह्मचारियों, कठोरव्रती मुनियों, एकपत्नीव्रत गृहस्थों की होती है-' जो सुभद्रा अभी ममता की मारी, मोह की मूर्ति, अज्ञान-सागर में डूबी, शोकाश्रुओं का पुंज-सी बन रही थी, श्रीकृष्ण के नीतियुक्त उपदेश से, जिसमें कुल के गर्व का, क्षात्र-धर्म का और साथ ही साथ अधम बदले की वृत्ति का भी पुट दिया गया था, एक ही क्षण में पुण्य-आशीषों की पुतली, आदर्श पुत्रवत्सलता की प्रतिमा, सच्ची वीर-जाया, वीर-माता बन गई। वेदना और अशोच-मोह और भक्ति ये भाव हैं तो परस्पर विरोधी ही, परन्तु मानव मानस का चमत्कार परस्पर विरोधों के इसी अद्भुत मेल में है। वेदना विरक्ति बन जाती है। शोक के अटूट स्रोत से झट शान्त-रस फूटने लगता है। मोह की मलीन वैतरणी के साथ ही साथ, नहीं उसके झीने-झीने आँचल के नीचे ही- ज्ञान की पवित्र गंगा बह रही है। पुत्र-हीना सुभद्रा सहसा विरक्त साध्वी हो गई। जिसे स्वयं सान्त्वना चाहिए थी, उत्तरा का हाल बुरा देख झट उसे धैर्य के उपदेश देने लगी। कृष्ण ने अनाथा उत्तरा की ओर संकेत कर उसके प्रति सुभद्रा की कर्तव्य-भावना को प्रेरित कर दिया। कर्तव्य ने मोह को मार दिया- नहीं, संभवतः केवल अन्तर्हित कर दिया।

कृष्ण इस घर के धन्धे से निवृत्त हो सोचने लगे- यह प्रतिज्ञा तो मानो बिना ओर-छोर का सागर है। इसके पार लगें तो क्योंकर? सर्वसाधारण के सामने खुली घोषणाओं के साथ यह भयंकर प्रतिज्ञा की गई थी। गुप्तचरों ने इसका समाचार कौरवदल में पहुँचा दिया। कृष्ण के चर खबर लाये कि जयद्रथ ने तो यह भयंकर समाचार सुन युद्ध से भाग जाने का निश्चय कर ही लिया था परन्तु द्रोण ने उसे यह कहकर ठहरा लिया कि कल एक जटिल व्यूह रचेंगे। उसके अन्त में जयद्रथ का स्थान होगा। अवधि एक ही दिन की तो है। कौरव सेना की समूची शक्ति गाण्डीव-धनुष से भी एक दिन के लिए तो जयद्रथ को बचा ही लेगी।

प्रतिज्ञा करने से पूर्व अर्जुन ने कृष्ण की सलाह ही ले ली होती। तब प्रतिज्ञा सम्भवतः इतनी भयंकर न रहती। पर

फिर उसका स्वरूप विस्फोटक का- बम से फूट उठने वाले मसाले का- न रहता। उसके द्वारा पुत्र-वध का बुखार न निकल सकता। अर्जुन को सुलाकर और यह विश्वास दिलाकर कि कल गाण्डीव के तीर होंगे और जयद्रथ का सिर होगा, श्रीकृष्ण अपने कैम्प में चले गए। कुछ देर सोकर रात के बीच ही में उठ खड़े हुए और अपने सारथि दारुक को बुलाकर कह दिया- रथ तैयार कर लो। लड़ाई का सारा सामान सुसज्जित रखो। देखें, कल क्या पेश आती है?

दूसरे दिन द्रोण ने एक जटिल व्यूह रचा। आगे का भाग सचक्र शकट का था। उसके पीछे सूचीपद्म था। सूची पद्म के गर्भ में गूढ़ व्यूह था। इन सबकी समाप्ति पर सेनाओं से घिरा हुआ जयद्रथ खड़ा था। शकट के मुख पर द्रोण थे। पद्म के मुख पर कृतवर्मा। जरासन्ध, दुर्योधन, कर्ण आदि इनके सहायक थे।

अर्जुन की पहली मुठभेड़ दुःशासन से हुई। उसे सेनासहित परास्त कर द्रोण के पास पहुँचा। अर्जुन ने कहा- आप मेरे गुरु हैं, कृपया मुझे रास्ता दे दीजिए। उन्होंने नहीं माना। कुछ देर दोनों धनुर्विद्या के मनोहर जौहर दिखाते रहे। द्रोण ने अर्जुन और कृष्ण दोनों को घायल कर दिया और कमान घुमा-घुमाकर उनके चारों ओर तीर ही तीर कर दिए। अर्जुन तीरों को रोकता रहा। स्वयं भी तीर चलाता रहा। परन्तु यह तो मानो गुरुदेव को उनका पढ़ाया पाठ सुनाना-मात्र था। इन शरों में अर्जुन हस्त-लाघव का तो प्रदर्शन करता था परन्तु गुरु-चरणों को चोट नहीं पहुँचाता था। कृष्ण ने उसके इस लाड़ चाव के अंदाज को ताड़ लिया। कहा- भाई! समय जाता है। अर्जुन ने गुरु के रथ की प्रदक्षिणा कर द्रोण के नाके से छुट्टी पाई, इस पर आगे चलकर दुर्योधन सटपटाया। कहने लगा- आचार्य ने अपने प्यारे शिष्य पर कृपा दिखाई है। परन्तु कर्ण ने उसे समझा दिया- भाई रास्ता तो वह बाहुओं के बल से ही ले सकता था। आचार्य ने अपना मान भी रख लिया और युद्ध का नियम निभाने को उससे दो हाथ भी कर लिये। इस पर क्रुद्ध काहे को होना? द्रोण पीछे से तीरों की वर्षा करता रहा परन्तु इसका अर्जुन की प्रगति पर कोई असर न हुआ।

अब भोज और कृतवर्मा अर्जुन के सामने आये। इन दोनों को आन की आन में पार कर कम्बोज (अफगानिस्तान) के राजा सुदक्षिण और श्रुतायुध से भेंट हुई। कृतवर्मा को अर्जुन ने छोड़ दिया परन्तु इन दोनों को मृत्यु का द्वार दिखा ही दिया। इनके पश्चात् श्रुतायु, अच्युतायु दीर्घायु तथा नियतायु को मार गिराया।

इन युद्धों में एक बार अर्जुन अच्युतायु के शूल से मूर्छित हो गया। कृष्ण ने उस समय रथ को भी सँभाला, अर्जुन को भी। रथ के चलाने-मात्र से शत्रुओं के वार खाली लौटाये। इस हल्ले में स्वयं श्रीकृष्ण पर भी तीरों की वर्षा हो गई। आगे चलकर अम्बष्ठ ने इन पर गदा चलाई। अर्जुन ने इसका बदला चुकाने में देर न की। उस गदा को तीरों से छेद दिया और तब अम्बष्ठ ने एक और गदा उठाई तो क्षुरप्रों से जो चपटे अग्रभाग के तीर होते हैं, गदा भी काट दी और अम्बष्ठ की भुजायें भी उड़ा दीं। एक और तीर से उसका सिर गर्दन से अलग कर दिया।

इसके पश्चात् दुर्योधन स्वयं लड़ने को बढ़ा। श्रीकृष्ण ने कहा- लो अभी युद्ध का फैसला हो जायगा। सारे उपद्रवों का मूल यही दुष्ट है। अपने समस्त संकटों का स्मरण कर इस एक को गाण्डीव का ग्रास बनाओ। फिर कोई लड़ने वाला रहेगा ही नहीं। अर्जुन ने गाण्डीव का बहुतेरा जोर लगाया। तीर ठीक निशाने पर बैठे परन्तु दुर्योधन पर आँच न आई। श्रीकृष्ण हैरान हुए। अर्जुन ने कहा- आचार्य की कृपा है। उनसे कवच लाया है। वह इस समय

(शेष पृष्ठ ३ पर...)

विनय पीयूष

वह मन मेरा शिव-संकल्पमय हो!

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो
यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां
तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।। (यजु० ३४/२)

मनीषी करें यज्ञ-सत्कर्म जिससे,
करें धीर अनुकूल संघर्ष जिससे;
बसा है, जो जन-जन के हृदयान्तर में,
जो है पूज्य, अनुपम, है उत्कर्ष जिससे,
वह मन मेरा शिव-संकल्पमय हो।

काव्यानुवाद : अमृत खरे

सम्पादकीय

खुल रहे हैं नये गवाक्ष !

२१ जू[illegible] र्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मान्यता मिलना तथा राष्ट्र [illegible] के राजपथ का योगपथ के रूप में तब्दील होना- प्रथम दृष्[illegible] समाज से प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष संबन्ध प्रतीत नहीं होता है किन्तु गहरा[illegible] आर्य समाज का इतिहास और उसकी धार्मिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण-विवेचन करने से यह ज्ञात होता है कि इस योग दिवस का आगमन महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के तपबल एवं योगबल का ही सुफल है। यह एक वास्तविकता है कि आर्य समाज की धार्मिक सांस्कृतिक मान्यताओं का मुख्य आधार महर्षि पतंजलि प्रणीत योग दर्शन ही है। आर्य समाज की मान्यताओं और दस नियमों में योग दर्शन का ही प्रसार दृष्टिगत होता है।

आधुनिक युग में योग-गंगा के भगीरथ योगऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज की उदात्त विचारधारा पर गौर करें तो तीन बातें बिलकुल स्पष्ट विदित होंगी। (अ) स्वामी जी परमात्मा को परमगुरु मानते हैं। योग साधना संबन्धी ग्रंथ में वे परमात्मा को परमगुरु कहकर संबोधित करते हैं। यह योगदर्शन के अनुसार ही है- महर्षि पतंजलि कहते हैं- 'गुरु स पूर्वेषामपि गुरूः कालेनानवच्छेदात्' (योगदर्शन) अर्थात् परमात्मा परमगुरु इसलिए है कि वह पूर्वकाल में भी था; वर्तमान में भी है और भविष्य में रहेगा। काल क्रम भी उसकी उपस्थिति एवं विद्यमानता में कोई व्यवधान नहीं डाल सकता। किसी सांसारिक गुरू पर 'कालेनानवच्छेदात्' की बात घटित नहीं होती है। (ब) परमात्मा के बाद अपना दूसरा गुरू वह महर्षि दयानन्द सरस्वती को मानते हैं, जो सशरीर तो नहीं किन्तु अपने साहित्य, विचार कार्यक्रमों के माध्यम से आज भी जीवित हैं।

'योग साधना व योग चिकित्सा रहस्य' नामक अपने विश्वविख्यात ग्रंथ में स्वामी रामदेव जी महाराज इसी तथ्य को रेखांकित करते हैं-'परम गुरू परमात्मा की कृपा व पूर्वजन्म के शुभ संस्कारों के कारण मैंने लगभग चौदह वर्ष की अवस्था में ही महर्षि दयानन्द सरस्वती के (वेदभाष्य को छोड़कर) सम्पूर्ण साहित्य का अध्ययन किया जिसके फलस्वरूप मेरे बाल हृदय में आत्मदर्शन व वेदाध्ययन की प्रेरणा हुई और मेरा जीवन प्रवाह श्रेय पथ की ओर मुड़ा।' (स) वर्तमान में उनके तृतीय गुरू जो अभी जीवित और जीवंत हैं- आचार्य बलदेव जी महाराज। इस गुरू का स्मरण स्वामी रामदेव ने इन शब्दों मे किया है-

''देवेच्छा से अध्ययन करते हुए ही पन्द्रह-सोलह वर्ष की आयु में गृहत्याग कर वेदज्ञ, आध्यात्मिक, आत्मज्ञानी गुरू के अन्वेषण में निकल पड़ा और भगवान् ने अपार करुणा करके आत्मद्रष्टा, श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ, ऋषिवर आचार्य बलदेव जी महाराज का पावन सान्निध्य प्राप्त कराया। इन्हीं महान् आचार्य ने कृपा कर मुझ अबोध बालक को पाणिनीय व्याकरण सहित उपनिषद, दर्शन व वेद-वेदांगों की शिक्षा प्रदान की व मुझे सच्चा ब्राह्मणत्व प्रदान कर जीवन को ब्रह्माभिमुखी बनाया।''

कहना नहीं होगा आचार्य बलदेव जी वर्तमान में महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा संस्थापित आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद पर विराजमान हैं। यह वही आर्य समाज है जिसका समग्र तानाबाना दयानन्द ने पतंजलि योगदर्शन के आधार पर बुना है। योग ही आर्य समाज का साधन है और साध्य भी। योग के आठ अंग- 'यम, नियम, प्राणायाम, आसन, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि' आर्य समाज का सर्वस्व है और इसी के अन्तर्गत महर्षि दयानन्द सरस्वती की विचारधारा अबाध गति से विचरण करती है। 'योगश्चित्तवंवृत्ति निरोधः' योग मनुष्य की चंचल, उच्छृंखल चित्तवृत्तियों का निरोध करता है जो संसार की एकता को विखंडित करती हैं; मानव- मानव में दीवारें खड़ी करती हैं, हिंसा और आतंक को बढ़ावा देती हैं; संसार में अराजकता, अशान्ति और युद्धों के उन्माद का सृजन करती हैं; योग उन्हीं चित्तवृत्तियों को अनुशासित और नियमित करता है तथा उन्हें शान्ति और सौख्य की ओर उन्मुख करता है। योग की शिक्षा है- सभी परमात्मा की संतानें हैं- 'वयं सर्वे भ्रातरः'- प्रेम से मिलकर चलो, बोलो सभी ज्ञानी बनो (संगच्छध्वं, संवदध्वं) यही मनुष्य का श्रेष्ठ स्वरूप है; यही 'कृण्वन्तोविश्वमार्यम्' है। दूसरे शब्दों में २१ जून २०१५ के अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर दिल्ली राजपथ का योगपथ बनना महर्षि दयानन्द और आर्य समाज द्वारा १५० वर्षों से चलाये जा रहे प्रचार अभियान की फलश्रुति एवं सैद्धांतिक विजय है।

यद्यपि दैव दुर्विपाक से सोची समझी हुई दुरभिसंधि के तहत कुछ छद्मवेशी पक्षीगण आर्य समाज रूपी वृक्ष की सबसे ऊँची फुनगी पर बैठकर उसके फलफूल चट कर रहे हैं और शाखाओं को कुतरने में लगे हुए हैं, तथापि अनेक आर्य संस्थानों, आर्य सदस्यों, वक्ताओं, प्रचारकों, लेखकों, पत्र-पत्रिकाओं की सुगठित संरचना के चलते- उज्ज्वल भविष्य का दिग्दर्शन कराने वाले नये गवाक्ष भी खुलते जा रहे हैं। योग दिवस के अनन्तर खुलने वाला नवीनतम गवाक्ष है- 'स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्राचार्य आचार्य श्री देवव्रत आर्य का हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल के गरिमापूर्ण आसन पर सुशोभित होना।

आचार्य देवव्रत जी का हिमाचल का राज्यपाल बनाया जाना रामराज्य की संकल्पना को साकार करने की दिशा में पहला कदम है। आचार्य जी के राज भवन में पदार्पण के बाद जो स्थिति बनी है- उसे गोस्वामी तुलसीदास जी की शब्दावली में इस प्रकार प्रकट किया जा सकता है-

लता विटप मांगे मधु चवहीं, मन भावतो धेनु पय स्रवहीं।
ससि सम्पन्न सदा रह धरनी, त्रेता भइ कृतजुग कै करनी।

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१६०

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में सप्तम समुल्लास का अंश

ईश्वर का स्वरूप

(प्रश्न) परमेश्वर सागुण है वा निर्गुण?

(उत्तर) दोनों प्रकार का है।

(प्रश्न) भला एक म्यान में दो तलवार कभी रह सकती हैं! एक पदार्थ में सगुणता और निर्गुणता कैसे रह सकती है?

(उत्तर) जैसे जड़ के रूपादि गुण हैं और चेतन के ज्ञानादि गुण जड़ में नहीं हैं। वैसे चेतन में इच्छादि गुण हैं और रूपादि जड़ के गुण नहीं हैं। इसलिये 'यद्गुणैस्सह वर्त्तमानं तत्सगुणम्', 'गुणेभ्यो यन्निर्गतं तन्निर्गुणम्' जो गुणों से सहित वह सगुण और दूसरे विरोधी के गुणों से रहित वह निर्गुण कहाता है। अपने-अपने स्वाभाविक गुणों से सहित और दूसरे विरोधी के गुणों से रहित होने से सब पदार्थ, सगुण और निर्गुण हैं। कोई भी ऐसा पदार्थ नहीं है कि जिसमें केवल निर्गुणता वा केवल सगुणता हो किन्तु एक ही में सगुणता और निर्गुणता सदा रहती है। वैसे ही परमेश्वर अपने अनन्त ज्ञान बलादि गुणों से सहित होने से सगुण और रूपादि जड़ के तथा द्वेषादि जीव के गुणों से पृथक् होने से निर्गुण कहाता है।

(प्रश्न) संसार में निराकार को निर्गुण और साकार को सगुण कहते हैं। अर्थात् जब परमेश्वर जन्म नहीं लेता तब निर्गुण और जब अवतार लेता है तब सगुण कहाता है?

(उत्तर) यह कल्पना केवल अज्ञानी और अविद्वानों ने की है। जिनको विद्या नहीं होती वे पशु के समान यथा तथा बड़ बड़ाया करते हैं। जैसे सन्निपात

ज्वरयुक्त मनुष्य अण्डबण्ड बकता है वैसे ही अविद्वानों के कहे वा लेख को व्यर्थ समझना चाहिये।

(प्रश्न) परमेश्वर रागी है या विरक्त?

(उत्तर) दोनों में नहीं। क्योंकि राग अपने से भिन्न उत्तम पदार्थों में होता है, सो परमेश्वर से कोई पदार्थ पृथक् वा उत्तम नहीं है। इसलिए उसमें राग का सम्भव नहीं। और जो प्राप्त को छोड़ देवे उसको विरक्त कहते हैं। ईश्वर व्यापक होने से किसी पदार्थ को छोड़ नहीं सकता, इसलिए विरक्त भी नहीं।

(प्रश्न) ईश्वर में इच्छा है वा नहीं?

(उत्तर) वैसी इच्छा नहीं। क्योंकि इच्छा भी अप्राप्त, उत्तम और जिसकी प्राप्ति से सुख विशेष होवे तो ईश्वर में इच्छा हो सके न उससे कोई अप्राप्त पदार्थ, न कोई उससे उत्तम और पूर्ण सुखयुक्त होने से सुख की अभिलाषा भी नहीं है। इसलिये ईश्वर में इच्छा तो सम्भव नहीं, किन्तु ईक्षण अर्थात् सब प्रकार की विद्या का दर्शन और सब सृष्टि का करना कहाता है; वह ईक्षण है। इत्यादि संक्षिप्त विषयों से ही सज्जन लोग विस्तरण कर लेंगे।

अब संक्षेप में ईश्वर का विषय लिखकर वेद का विषय लिखते हैं-

यस्मादृचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन्।
सामानि यस्य लोमान्यथर्वाङ्गिरसो मुखं स्कम्भन्तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः।।

अथर्व. १०/२३/४/२०

जिस परमात्मा से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद प्रकाशित हुए है वह कौन सा देव है?

इसका उत्तर- जो सबको उत्पन्न करके धारण कर रहा है वह परमात्मा है।

स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।। *यजु. ४०/८*

जो स्वयंभू, सर्वव्यापक, शुद्ध, सनातन, निराकार परमेश्वर है वह सनातन जीवरूप प्रजा के कल्याणार्थ यथावत् रीतिपूर्वक वेद द्वारा सब विद्याओं का उपदेश करता है। *(क्रमशः)*

वेद प्रवचन

मुझे रोने दो भाई !

❑ डॉ.सुरेन्द्र कुमार शर्मा

इमं में वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय।
त्वामवस्युरा चके।। *(ऋ 1/25/19)*

शब्दार्थ-

(**इमम्**) इसको (**मे**) मेरी (**वरुण**) हे सबको आच्छादित करने वाले सर्वव्यापक प्रभो! (**श्रुधि**) सुनो (**हवम्**) पुकार को (**अद्य**) इसी समय पुकार करते ही (**च**) और (**मृळय**) सुखी करो, दुःखों को दूर करो (**त्वाम्**) आपको (**अवस्यु**) रक्षा, कृपा चाहने वाला मैं (**आ**) भली भाँति (**चके**) प्रसन्न करता हूं।

व्याख्या-

मुझे रोने दो भाई, क्या बिगाड़ा है मैंने आपका। मुझे आँसू बहाने से क्यों रोक रहे हो? ईश्वर की कृपा से बड़ी मुश्किल से तो रोने का शुभावसर मिला है और आप उसमें ही बाधा डाल रहे हैं। आपको क्या पता रोने का आनन्द! कभी रोए होते तो पता चलता। आपने तो आँसुओं की जलधारा को रोककर जीवन की बगिया ही सुखा डाली है, जिस पौधे पर अनवरत खुश्क मुस्कान की धूप पड़े और आँसुओं के जल बिन्दु ही न पड़े, वह पौधा तो सूखेगा ही।

आपने किसी दुल्हन को विवाह के अवसर पर रोते हुए देखा है? वह विदा होते हुए अपने आँसुओं की जलधार से घरातियों और बरातियों दोनों के हृदय रूपी आँगन को भिगोकर सराबोर कर देती है। सावन की घटा के समान सबकी आँखों में आँसू होते हैं। क्या उस समय आप आँसुओं का होना बुरा मानते हैं? तब तो आप भी रोते हैं। जो उस समय अश्रु-प्रवाह के सुख से वंचित रहना चाहता है वह मानव नहीं, पत्थर है। जब वेदना जनित आँसू आँखों में प्रकट होते हैं, अनिर्वचनीय आनन्द से लबालब भर जाते हैं तथा फिर कपोलों की कोमल शैय्या से खिसक कर पृथ्वी माता की अंक में समा जाते हैं तब इन्हीं आँसुओं को विवाह का शगुन कहा जाता है। वह विदाई ही क्या जिसमें बराती और घराती न रोए, वह आँख ही क्या जिसमें आँसू न हो।

आप डाक्टर के पास जाते हैं। हजारों शिकायतें करते हैं कि मेरी आँखें दुखती हैं, मुझे कम दीखता है, तथा आँखों में कुछ चुभता सा रहता है। पर क्या कभी आपने डाक्टर से शिकायत की है कि मेरी आँखों में आँसू नहीं आते। इतने बड़े महारोग की उपेक्षा! यदि यदा कदा आँखों में आँसू आते भी हैं तो हम उन्हें पोंछ देते हैं या छिपा लेते हैं। क्या भोले भाले मनुष्य की कोमलता और मृदुलता के परिचायक आँसुओं का आँखों से झाँकना पाप है?

एक बच्चा ईश्वर की अमूल्य धरोहर इन आँसुओं का कितना अच्छा सदुपयोग करता है। मानों ये आँसू उसकी पीड़ा के संदेशवाहक हैं, ईश्वरीय वरदान हैं। माँ भले ही चाहे सब कुछ सह जाय पर अपने बच्चे के आँसू नहीं सह पाती, अपना सब कुछ उड़ेल देती है, बच्चे को चुप कराने के लिए। बच्चा थोड़ा सा भी रोया, चीखा-चिल्लाया कि माँ झपट कर आई, बच्चे को सीने से लगाया और माँ की ममता की ऊष्मा पाकर वह चुप हो गया। देखा आपने आँसुओं का जादू और इसी जादू से आप बचना चाहते हैं।

मुझे बुढ़ापे में अक्ल आई है। एक रहस्य का पता चला है। आपको भी बताये देता हूँ, नहीं तो मुझे पाप लगेगा और वह रहस्य यह है कि ईश्वर भी तो हमारी माँ है। तभी तो हम कहते हैं- 'त्वमेव माता' उस माँ ने भी हमारी आँखों में आँसू भर दिए हैं और हमें समझा दिया है कि हे मेरे बच्चे! जब कभी तुझे मेरी जरूरत पड़े, किसी प्रकार की चिन्ता सताए तो तू आँसू बहा देना, रो पड़ना, मैं दौड़ी-दौड़ी चली आऊँगी। क्या कभी हमने ऐसा किया? हम रोते हैं, आँसू बहाते हैं पर क्यों? पैसे कमाने के लिए, सन्तान सुख पाने के लिए तथा भोग-विलास के साधन जुटाने के लिए। हमें तो आँसू बहाना भी नहीं आता। हम गलत जगह आँसू बहाकर उनका सत्यानाश ही कर डालते हैं।

याद रखिये, आँसू और मुस्कान मनुष्य के सहज स्वाभाविक धर्म हैं, मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है। किसी एक को रोकना नियम विरुद्ध है। यदि हम मुस्कान ही बिखेरते रहें और आँसू को पास भी न फटकने दें तो यह नियम विरुद्ध कार्य होगा। किसी की पीड़ा से द्रवित होना ही तो आँसू बहाना है। मानव जीवन रूपी तरु को पहले आँसुओं से सींचिए तभी उसमें मुस्कान के फल लगेंगे।

हम कोई ऐसा कार्य न करें जो ईश्वरीय विधान या प्रकृति के नियमों के विरुद्ध हो। आजकल मनुष्य सभ्य, शालीन कहलाने के चक्कर में आँसुओं के बाँध को रोक देना चाहता है। परिणामतः तनाव, अवसाद, चिन्ता, रक्तचाप का कीचड़ साफ नहीं हो पाता और मनुष्य उस दलदल में धँस कर, फँसकर समस्त जीवन को ही नष्ट कर देता है। यदि मनुष्य समय-समय पर अश्रुधारा बहाकर इस कीचड़ को साफ करता रहता है तो उसका हृदय मंदिर हमेशा स्वच्छ और पवित्र रहता है।

२३०, आर्य वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-८३

असीमौदार्यन्ते वितरसि यथेच्छं त्वविरलं
यथापात्रं लोकः कलयति च संकोचरहितः।
मम क्षुद्रं पात्रं तदपि च तवादर्शभरितं
प्रलुब्धं चित्तं मे कलयतु कथं सोत्सुकमपि।।

तेरी दानवीरता असीम है।
याचकों को उनकी इच्छा के अनुसार
अनवरत दान देते हो !!
और लेने वाले निःसंकोच भाव से
अपने पात्रों के अनुसार
ग्रहण करते रहते भी हैं !!!
हे संन्यासी !
मुझ अभागे का पात्र ही छोटा है
और वह पहले ही तुम्हारे
आदर्शों से भरा हुआ है !
मेरा लालची मन
उत्सुक होते हुए भी
कैसे ग्रहण करे ?

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

सत्संग
जिज्ञासा और समाधान

जिज्ञासा (१): किसी कार्यक्रम में मंचस्थ विभूतियों के स्वागत एवं सम्मान में उन्हें कीमती ताजे पुष्पों से बनी मालायें पहनायी जाती हैं जिससे मंच की शोभा बढ़ती है लेकिन माला पहनाते ही लोग तत्काल उतार देते हैं। लगता है कि यदि माला उनके गले में पड़ी रहेगी तो वे अस्वस्थ या बेहोश हो जायेंगे या अदृश्य क्षति के भागी बनेंगे। क्या यह व्यवहार विभूतियों द्वारा किया जाना उचित है? क्या यह स्वागत करने वाले का अपमान नहीं है? इसके परिहार हेतु क्या किया जाना समीचीन होगा?

-राजाभइया गुप्ता 'राजाभ', 616/227 बसंत विहार, सेमरा गौढ़ी, लखनऊ

समाधान : सम्मानित की जाने वाली विभूतियों द्वारा यह व्यवहार कदापि उचित नहीं है। सम्मानकर्त्ता बड़े प्रेम और श्रद्धा पूर्वक तथा समय और धन व्यय करके मालाएँ तैयार करते हैं और पहनाते हैं। विभूतियों को मालाओं को स्वीकारना ही उचित है। किन्तु प्रत्येक मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र है- अतः विभूतियों पर कोई बात कैसे आरोपित की जा सकती है? उन्हें स्वयं विचार करना चाहिए। आप अपने कर्त्तव्य का सही ढँग से निष्पादन करें। अन्यों की चिन्ता न करें-

'कर्मण्येवाधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचन्' (गीता)।

जिज्ञासा (२): अंक अगस्त 2015 में 'जिज्ञासा और समाधान' कॉलम में एक ओर तो कहा गया है कि फूल को डाली से तोड़ना पाप है वहीं दूसरी ओर कहा जा रहा है कि श्रेष्ठ व्यक्ति को सम्मानित करने के लिए इनका प्रयोग किया जा सकता है। यहां तक कि पुष्प गुच्छ के रूप में भेंट स्वरूप भी इनका प्रयोग किया जा सकता है। वैज्ञानिक नियमों के अनुसार इनका तोड़ना ही वर्जित हो अथवा व्यक्ति जिसे श्रेष्ठ मानता हो, उसके लिए प्रयोग होना चाहिए। श्रेष्ठता के मानदण्ड क्या होंगे, इसे कौन निर्धारित करेगा।

गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस 'सुमन वर्षा' से भरी हुई है वहीं दूसरी ओर यज्ञादि कार्यक्रमों में भी जिन सभी लोगों को माला पहनाई जाती है, उनकी श्रेष्ठता कैसे सिद्ध होगी।

मूर्तिपूजक होना व मूर्तिपूजक न होना एक सैद्धांतिक विषय है, जिस पर काफी समय से विवाद रहा है। यदि हम अपने स्वर्गवासी पितरों पर माल्यार्पण करने के लिए स्वतंत्र हैं तो किसी देवी देवता की मूर्ति में किसी को माल्यार्पण न करने की सलाह कैसे दे सकते हैं। सभी प्राकृतिक पदार्थ, जैसे फूल, लकड़ी आदि स्वयं ही पंचतत्व में विलीन हो जाते हैं। अतः नदियों का प्रदूषण फूलों-पत्तियों आदि से न होकर अन्य कृत्रिम वस्तुओं के कारण हो रहा है, अतः इस प्रकार के तर्क भ्रम उत्पन्न कर सकते हैं। आर्य समाज द्वारा प्रायोजित विवाह आदि कार्यक्रमों में भी फूलों की अनेक मालाएं मंगाई जाती हैं और लोगों को पहनाई जाती हैं। यदि किसी की आस्था स्वरुप देवी-देवताओं पर ये पुष्प चढ़ाना उपयुक्त नहीं है तो फिर उन सभी लोगों को मालाएं पहनाया जाना भी उचित नहीं कहा जा सकता।

-शालू पाण्डेय, मंदाकिनी, अणुशक्ति नगर, मुम्बई-९४

समाधान : (१) अगस्त २०१५ अंक के 'समाधान' में यह कहीं नहीं लिख गया है कि 'फूल तोड़ना पाप है।' यह वक्तव्य आपका मनगढंत है, इसलिए सम्पूर्ण प्रतिक्रिया ही मनगढ़न्त हो गयी है। निश्चित ही, आप जैसी सच्चे सरोकारों वाली महिला ऐसी हेत्वाभासों से पूर्ण प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं कर सकती। जो भी हो, जड़ को चेतन और चेतन को जड़ मानना तथा तदनुरूप व्यवहार करना 'अविद्या' है। मनुष्य को अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

(२) दिवंगत पितरों को माल्यार्पण किया ही नहीं जा सकता। जीवित माता पिता पितामह आदि को माल्यार्पण करना, सेवा करना ही, उचित है; जड़ पदार्थों, मूर्तियों आदि को ऐसी सेवा की नहीं सुरक्षा और सजावट की जरूरत है।

(३) 'रामचरितमानस' में पुष्प वर्षा इत्यादि प्रसंग आलंकारिक हैं, यथार्थ नहीं। कवि के काव्यकौशल के परिचायक हैं।

(४) पंचतत्व में तो हम सभी लीन हो जायेंगे तो क्या हमे अपनी अपनी पर्यावरण और नदियों के जल की शुद्धता नहीं करनी चाहिए। फूलों, पत्तियों, शवों, अस्थियों इत्यादि से नदियों का जल दूषित नहीं होता है- यह नितान्त विज्ञान विरुद्ध दृष्टिकोण है। अब सरकार भी नदियों के जल को ऐसे प्रदूषणों से बचाने हेतु प्रयत्नशील है।

(५) आर्षग्रन्थ, तुलसी, मैथिलीशरण, माखनलाल चतुर्वेदी जैसे कवियों के उद्धरणों को नजरअंदाज कते हुए मूर्ति पूजा जैसे विषयों की तरफ मोड़ देने वाला ऐसा लेखन भला आप क्यों करेंगी? अवश्य यह किसी सिद्धहस्त लेखक का लेखन है, जिसका उद्देश्य 'जिज्ञासा' न होकर बौद्धिक चातुर्य का प्रदर्शन मात्र प्रतीत होता है।

–सम्पादक

(पृष्ठ 1 का शेष......)

जैसी वीरगति.....

मरेगा नहीं। तो भी उसके घोड़े मार डाले। चाप चीर दिया, सारथि और पार्ष्णि का घात कर दिया। शरीर का जो भाग कवच के बाहर था, उसे घायल कर दिया। दुर्योधन इस व्यथा में फिर सामने खड़ा न रह सका।

आज की लड़ाई में कल की-सी अवस्था न थी। अर्जुन ने जहाँ व्यूह का भेदन किया वहाँ दूसरे योद्धाओं का भी व्यूह में प्रवेश हो गया। स्थान-स्थान पर संकुल युद्ध हो रहे थे। अर्जुन जिन वीरों को जीतकर आगे निकल जाता, वे पाण्डव-सेना के और महारथियों से उलझ जाते थे। इस प्रकार अर्जुन का भार हलका हो जाता था।

सायंकाल होने को था। अर्जुन व्यूह के उसी भाग में उपस्थित था जिसमें जयद्रथ था। कर्ण, कृप, अश्वस्थामा, कर्ण का पुत्र वृषसेन, शल्य, दुर्योधन सब एक साथ जुटे हुए जयद्रथ की रक्षा कर रहे थे। इधर अर्जुन की प्रतिज्ञा थी, उधर यह विचार था कि यदि यह प्रतिज्ञा निष्फल हो जाये तो अर्जुन तो निश्चय ही जीता ही चिता पर चढ़, मर जायेगा। फिर पाण्डवों का क्या है? दोनों पक्ष ढलते दिन को क्षण-क्षण गिन रहे थे। अपना सारा बल तथा सारा युद्ध कौशल युद्ध के इन क्षणों पर ही केन्द्रित कर देने में कोई वीर जरा भी कोर-कसर न कर रहा था।

श्रीकृष्ण अपनी प्रातःकाल की समर सज्जा में अंधेरा पैदा करने वाले योगों का प्रबन्ध कर लाये थे। इस समय उन्होंने इन योगों का प्रयोग किया। ऐसे योग आजकल लड़ाइयों में प्रयुक्त होते हैं, जिनसे चारों ओर जल-थल में अंधेरा छा जाता है। अर्जुन तो सचेत था ही। विपक्षी यह चमत्कार देख चकित रह गये। जयद्रथ और उसके साथी सूर्य की ओर देखने लगे। कर्ण आदि व्याकुल तो हुए परन्तु अपने कर्तव्य से नहीं हटे। अंधकार का फल केवल इतना हुआ कि अर्जुन अपने स्थान से झट आगे बढ़ गया। उसे कौरवों के एक बड़े जमाव को तितर-बितर करना पड़ा इसके पश्चात् आन की आन में जयद्रथ के पास जा उसे एक अचूक तीर का निशाना बना दिया। कर्ण, कृप, अश्वत्थामा आदि अर्जुन पर तीर फेंकते रहे परन्तु वे तो मानों हवा में ही लाठी चला रहे थे। इधर अंधकार हटा, अस्त होते सूर्य ने आखिरी झांकी दी, उधर जयद्रथ का सिर कटकर उसके पिता वृद्धक्षत्र की गोद में जा पड़ा। *('योगेश्वर कृष्ण' से साभार)*

वाचनालय से

'सूर्य नमस्कार : सर्वोत्तम व्यायाम भी, धर्म भी' शीर्षक **'परोपकारी'** पाक्षिक (अजमेर) की सम्पादकीय में धर्मवीर लिखते हैं कि प्रधानमंत्री मोदी के प्रयासों से इक्कीस जून का दिन योग दिवस के रूप में मनाने की घोषणा हुई। कुछ लोगों को क्योंकि मोदी के नाम से ही चिढ़ है, अतः मोदी का नाम आते ही उनका मुँह कड़वा हो जाता है। फिर योग दिवस का सम्बन्ध मोदी के नाम से जुड़ गया, तो योग भी उनके लिये कड़वा हो गया और वे थूकने के लिये मजबूर हैं। ऐसे लोगों का कहना है कि योग हिन्दुओं का है। योग साम्प्रदायिक है। सूर्य नमस्कार नहीं करेंगे क्योंकि मुसलमान खुदा के अतिरिक्त किसी के सामने सिर नहीं झुकाता। उनको...और स्पष्टीकरण देने वालों की भी कमी नहीं। लोग कहते हैं कि योग धार्मिक नहीं। सूर्य नमस्कार व्यायाम है, धर्म नहीं। ये बेचारे जानते ही नहीं कि हमारे सब किये जाने वाले काम धर्म ही होते हैं। जिस-जिस बात को हम धर्म मानते हैं, क्या ईसाई और मुसलमान उनको करना छोड़ देंगे या उनको मानना छोड़ देंगे? हम सत्य बोलना धर्म समझते हैं, आप सत्य बोलना-छोड़ना पसन्द करेंगे या झूठ बोलना स्वीकार करना चाहेंगे? हमारे यहाँ कौन-सा भला काम है, जिसकी धर्म में गणना नहीं की गयी। हमारे यहाँ माता-पिता की, गुरुजनों की, पीड़ितों की, असमर्थों की सेवा और रक्षा करना धर्म है। इनसे पूछो, ये क्या अपने बड़ों को, महापुरुषों को, देवी-देवताओं को, भगवानों को जूते मारने का विधान करेंगे। हमारे यहाँ जीवन की हर क्रिया श्रेष्ठ रूप में की जा सके, अतः धर्म के साथ जोड़ा गया है, फिर तो आपको हमारा धर्म स्वीकार करना पड़ेगा या मृत्यु को अपनाना पड़ेगा। इच्छा आपकी है, आप कौन सा विकल्प स्वीकर करेंगे?....सूर्य नमस्कार का विरोध धार्मिक स्तर पर अज्ञान मूलक है और राजनीतिक स्तर पर एक धूर्तता पूर्ण कार्य है!

'गुरुकुल और मदरसा- क्या तुलना करना सही है?' यह प्रश्न **'आर्य सन्देश'** साप्ताहिक (नई दिल्ली) के सम्पादकीय लेख में उठाया गया है। पत्र लिखता है कि महाराष्ट्र की फड़नवीस सरकार ने अठारह हजार मदरसों को एक मजहबी शिक्षा का स्रोत मानते हुए स्कूलों की श्रेणी से बाहर करने का फैसला लिया। यह फैसला भले ही इस्लाम के स्वयं घोषित धर्मगुरुओं में बेचैनी पैदा करे, किन्तु उसमें पढ़ रहे मासूम बच्चों को राहत प्रदान करने वाला है। अरबी-फारसी मजहबी शिक्षा प्रणाली से निकल कर अब वे बच्चे शिक्षा की मुख्य धारा से जुड़ सकेंगे।...देश की मीडिया इस खबर को राष्ट्रीय मुद्दा बनाकर मदरसों की आपसी तुलना गुरुकुल से कर रही है।...इन दोनों की आपसी तुलना करना ठीक ऐसे है जसे गुलाब और गोभी के फूल की तुलना करना।

भारत में मदरसा प्रणाली अरब, ईरान और मुगल लुटेरे लेकर आये। ये १७वीं शताब्दी के अन्त तक अपनी जगह तक नहीं बना पाये। १८वीं सदी में दिल्ली में औपचारिक रूप से मदरसा-ए-रहीमिया स्थापित किया गया। १८६७ में देवबन्द में मदरसा-ए-दारुलउलूम की स्थापना हुई। इसके बाद मदरसों की बाढ़ आ गयी। मजहबी शिक्षा के ये केन्द्र केवल गरीब मुस्लिमों को धर्म के नाम पर छलते रहे। इस्लाम के तथाकथित रहनुमा जिन्ना खुद विदेश में पढ़े। ओवैसी, गिलानी व अन्य मुस्लिम नेताओं के बच्चे विदेशों में पढ़कर भारत में मदरसों की मांग करते हैं! क्यों?

'वैदिक संसार' मासिक (इन्दौर) ने पं. श्री विश्वबन्धु शास्त्री का रोचक लेख 'वैदिक शिव' प्रकाशित किया है। शास्त्री जी लिखते हैं कि पौराणिक कल्पना के अनुसार शिव कैलाश पर्वत पर रहता है, हिमालय की पुत्री पार्वती से पाणिग्रहण करता है, दक्षिण हाथ में त्रिशूल धारण करता है वाम में डमरू। सिर पर गंगा है। मस्तक पर अर्द्धचन्द्र है। तीन नेत्र हैं। सवारी नन्दिया अर्थात वृषभ है। गले में मुण्डमाल है। बाघाम्बर धारण किया हुआ है। सर्पों का यत्र-तत्र बन्धन है। देवों के कष्ट दूर करने के लिए विषपान कर नीलकण्ठ नाम पाया। यह शिव कौन है?....

यह शिव है योगी! योगी कैलाश पर निवास करता है। पर्वत दृढ़ता का प्रतीक है। पर्वत व्रत का प्रतीक है। योगी अपने मस्तिष्क के विशुद्ध विचारों (तृतीय नेत्र) द्वारा कामरूपी महाशत्रु को भस्म कर देता है। संसार में तीन प्रकार के 'शूल' (त्रिशूल) हैं- आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक। इन 'शूलों' (दुःखों) से छुटकारा पाने में योगी भरसक प्रयत्नशील और अत्यन्त पुरुषार्थी है। योगी 'नाद' (नान्दिया या वृषभ) पर आरूढ़ रहता है। योगी प्रणव का जाप करता है। यही उसके पास वृषभ है। योगी अपने अतीत जन्मों को जान लेता है कि मैंने कौन कौन से सिर धारण किये। यही उसका मुण्डमाला धारण करना है।

प्रत्येक योगी शरीर और आत्मा के सम्बन्ध को भली प्रकार जान लेता है। वह शरीर को आत्मा के ऊपर लिपटी हुई भस्म ही समझता है। योगी के मस्तिष्क में ज्ञान-गंगा हिलोरें मारती हैं। चन्द्र आह्लाद का प्रतीक है। योगी के काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह, ईर्ष्या, द्वेष आदि विषधर अन्तर को छोड़कर बाहर आ बैठते हैं। योगी बड़ी से बड़ी कठिनाइयों का सामना करता है। विष दिये जाते हैं। उनका पान करता है। समाज को क्षतिग्रस्त नहीं होने देता। पार्वती प्रकाशवती बुद्धि 'मेना' (मेरा नहीं) से उत्पन्न होती है। 'इदं न मम' का विशदार्थ है। योगी डमरू बजाता है। यह 'दमरू' है। वह इन्द्रिय दमन का पाठ पढ़ाता है।

भारतवर्ष 'शिव' अर्थात् योगियों के लिये प्रसिद्ध है। भारतीयों का तीन चौथाई समय योग साधना में ही, शिव बनने में, व्यतीत होता रहा है। 'शव' और 'शिव' में इकार का अन्तर है। इकार शक्ति का प्रतीक है। शक्ति है तो 'शिव' है, अन्यथा 'शव' है।

शुभाकांक्षा

'आर्य्य लोक वार्ता' का अगस्त, २०१५ अंक हस्तगत हुआ। धन्यवाद। मुख पृष्ठ पर शिवनारायण उपाध्याय जी का लेख 'पहला वायुयान पश्चिम में नहीं, भारत में बना था, अनूठा, शोधपरक एवं रोचक है। इससे यह तथ्य भी उजागर होता है कि ऋग्वेद वास्तव में ज्ञान एवं विज्ञान की खान है। मेरी जानकारी के अनुसार आदिकाल के विभिन्न कालखण्डों में ऋषियों एवं ऋषिकाओं द्वारा गाई गई ऋचाओं का संकलन ही ऋग्वेद है। लगता है वे लोग महामानव ही रहे होंगे! आपका सम्पादकीय खोजपरक एवं प्रभावकारी है। 'मनुष्य का विराट् रूप' में कुसंस्कारों, अज्ञान एवं स्वानुराग की बहुत सुन्दर विवेचना की गई है। 'अनन्त की खोज' ज्ञानवर्द्धक एवं उपयोगी है तथा इसमें धर्म, अध्यात्म एवं दर्शन के दर्शन होते हैं। 'काव्यायन' के अन्तर्गत श्री महेश चन्द्र द्विवेदी जी तथा श्री गोपालसिंह 'नेपाली' की रचनाएँ श्रेष्ठ हैं जो मन को छू गईं। अनेक महत्त्वपूर्ण समाचारों की भी जानकारी हुई

-डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर

जी-०२, तोरपुर रेजीडेंसी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता का अगस्त २०१५ अंक प्राप्त हुआ।

अंक हाथ में आते ही मन मुग्ध हो गया। मुख पृष्ठ पर लेख देखकर जिसका शीर्षक है 'पहला वायुयान पश्चिम में नहीं भारत में बना था' लेखक हैं शिवनारायण उपाध्याय और विमान निर्माता थे श्री शिवशंकर बापू तलपटे। लेख बहुत ही अच्छा लगा। पृष्ठ आठ पर 'प्रियपाल जयन्ती' का समाचार पढ़कर लगभग ४४ वर्ष पूर्व की याद आ गई। वर्ष १९७१-७२ में मैं बाराबंकी मुख्य डाकघर में काम करता था तब प्रियपाल जी की एक काव्यकृति जिसका शीर्षक है 'अन्तर्ध्वनि'- प्राप्त हुई जो आजतक मेरे पास सुरक्षित रखी है। इस बार लेख कविताओं आदि के साथ साहित्यिक समाचार काफी हैं। अंक पठनीय है। सम्पादक जी को साधुवाद।

-दयानन्द जड़िया 'अबोध'

३७०/२७, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता जुलाई २०१५ के

अंक में अग्रलेख यशस्वी प्रधान मंत्री भारत सरकार पर है। इस लेख (पृष्ठ तीन) में 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' की भावना से प्रेरित बुद्ध के उपदेश लेख का अंश है। मैं वैदिक साहित्य के साथ अन्य साहित्य को भी पढ़ता रहता हूँ और उनके नियमित ग्राहक भी हूँ। वैसे इस समय 'चौदहवीं का चाँद' प्रा.राजेन्द्र जिज्ञासु द्वारा अनुवादित पढ़ रहा हूँ। जहाँ तक बौद्ध साहित्य का प्रश्न है पढ़ने का अवसर मिलता रहता है। उसके अनुसार बुद्ध का उपदेश इस प्रकार है-

सब्बे सत्ता सुखी होन्तु,
सब्बे होन्तु च खेमिनो।
सब्बे भद्राणि पस्सन्तु,
माकंचि दुक्ख गमा।।

जहाँ तक मेरी समझ में आ रहा है यह 'सर्वे भवन्तु सुखिनः.....पश्यन्तु' का रूपान्तर है।

-शिवधर मौर्य

सी-१/४४, विक्रान्त खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ

(विश्व के सभी धर्मों (मत/मतान्तरों) में जो श्रेष्ठ बातें हैं, वे वैदिक धर्म से गयी हैं, बौद्ध धर्म भी इसका अपवाद नहीं है। -सं.)

***

वास्तव में श्री नरेन्द्र मोदी भारत देश

के लिए वरदान बनकर आये हैं किन्तु कुछ कलुषित विचारों वाले लोग उनमें दोष निकालते रहते हैं। यह तो जग का चलन है जहाँ कोई अच्छा कार्य करना चाहता है दूसरा उसमें कमियां निकालने लगता है। स्वामी रामदेव जी की आचार्य चाणक्य से तुलना करना अच्छा लगा। सम्पादकीय में सम्पादक जी ने कितना निर्भीक होकर मनुष्य की मनुष्य के प्रति भेदभाव की भावना को उजागर किया है। मनुष्य ही मनुष्य का शत्रु बन रहा है। सब एक दूसरे को नीचा दिखाने में लगे हैं। 'सत्यार्थ प्रकाश वार्ता' एवं 'वेद प्रवचन' दोनों ही ज्ञानवर्द्धक हैं। 'शुभाकांक्षा' में सबके अलग-अलग एवं जोशीले विचार पढ़ने को मिलते हैं। 'काव्यायन' में बेटियाँ एवं योग का दबदबा रहा। अन्य सभी विभिन्न प्रकार के समाचारों से सुसज्जित आर्य लोक वार्ता के लिए सम्पादक जी को अनेकों साधुवाद।

-श्रीमती कमलेश पाल

एम.एस १२०, से-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता का जुलाई अंक प्राप्त

हुआ। 'नरेन्द्र मोदी विश्व मानवता के लिये ईश्वरीय देन हैं' बहुत पसन्द आया। यह सत्य है कि उन्होंने (नरेन्द्र मोदी) योग दिवस मनाकर एक ऐसी लकीर खींच दी है जिसके समक्ष पूर्व खींची हुई सभी लकीरें छोटी पड़ गई हैं। भारतीय जनता को उनका कृतज्ञ होना चाहिए। सम्पादकीय तो अच्छी है ही उसका शीर्षक प्रसाद जी की पंक्ति 'खोलो प्रियतम खोलो द्वार' हृदय को आह्लादित कर देता है। राजाभइया 'राजाभ' के श्री नरेन्द्र मोदी के प्रति लिखे दोहे तथा श्रीनाथू राम शर्मा 'शंकर' का कालजयी काव्य 'भारतोदय हो गया' हृदय को छू गया। आर्य लोक वार्ता में सभी कुछ ज्ञानवर्द्धक है। सम्पादक जी की योग्यता वन्दनीय एवं अभिनन्दनीय है। उनके विषय में कुछ कहना सूर्य को दीपक दिखाना है।

-आभा मिश्रा

लोकमान्य विद्या मंदिर,

३६४/४०, लकड़मंडी, सआदतगंज, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता का जुलाई २०१५ अंक प्राप्त होते ही पढ़ना आरम्भ कर दिया। मुखपृष्ठ पर विश्व योग दिवस पर विशेष लेख प्रधान सम्पादक जी के ज्ञान एवं कौशल का प्रमाण है। कई बुद्धिजीवी जो अभी तक आर्य लोक वार्ता के नियमित सदस्य या पाठक नहीं हैं उनको हमने कुछ अंकों की विशेषकर जुलाई अंक की प्रतियां दी हैं। योग प्राणायाम के रहस्य-महिमा एवं बीमारियां दूर भगाने के लाभों को हम गत २० वर्षों से जानते-पढ़ते रहे हैं किन्तु उक्त सारगर्भित लेख को पढ़कर एवं हमारे देश के ही नहीं विश्व के लोकप्रिय कर्मयोगी श्री नरेन्द्र मोदी जी के गुणों-

प्रतिभाओं को पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता हुई। सम्पादकीय भी अनेकों शिक्षाएं देने वाला प्रभावशाली लेख है। सोमनाथ मंदिर के पुजारियों को शिक्षा लेनी चाहिए। आर्य-अनार्य की परिभाषा पुनः सम्पादकीय में प्राप्त हुई। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का उद्घोष सभी को अपनाना चाहिए। हम सभी समुदायों, सभी प्राणियों को अपने कुटुम्ब का सदस्य मानें तो सही। इतने प्रचार प्रसार के बाद भी हम आपस में एक दूसरे से द्वेष करते हैं।

इस अंक में वैदिक विद्वान एवं कवि तथा आर्य लोक वार्ता के प्रमुख स्तम्भ श्री अमृत खरे जी के 'वाचनालय से' एवं 'अक्षर लोक' का अभाव खटका। स्थानाभाव के कारण हम विभिन्न पत्रिकाओं के लेखों की समीक्षा से वंचित रह गए। 'काव्यायन' के अन्तर्गत सभी प्रस्तुतियां- 'योग अपनाइए' श्री जड़िया जी की, हर्ष चतुर्वेदी-कल, 'देख लो लोगों दुबारा, भारतोदय हो गया' तथा श्री राजाभइया गुप्ता 'राजाभ' की प्रस्तुति 'श्री नरेन्द्र मोदी के प्रति' हृदय स्पर्शी हैं। आर्य लोक वार्ता के इस पृष्ठ पर उच्च कोटि के गीत-कविताओं से प्रत्येक अंक गरिमामय हो जाता है। 'जिज्ञासा और समाधान' में डा.सत्य प्रकाश (सण्डीला) ने पुष्पों को तोड़ कर मूर्तियों या शवों पर चढ़ाने पर समाधान चाहा है वह अच्छा है। समाधान करते हुए जो संदर्भ दिए गए हैं वे तर्क संगत हैं। कुछ मास पूर्व मैंने भी इस विषय पर गम्भीरता से विचार किया और महर्षि दयानन्द जी के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में विभिन्न स्थानों पर सकारात्मक तर्क दिए गए हैं। इस दिशा में समस्त वेद प्रेमियों को ध्यान देना चाहिए जिससे कि पर्यावरण सुधार करने में सफलता मिलेगी। अंतिम पृष्ठ पर आदरणीय भाई साहब श्री आर.डी. कटियार की जयन्ती १५ जुलाई पर प्रधान सम्पादक महोदय ने जो श्रद्धांजलि दी है उसके लिए हम उनके आभारी हैं। परम पिता परमात्मा से आर्य लोक वार्ता की प्रगति हेतु प्रार्थना करते हैं।

-पाल प्रवीण

'योगाश्रम', से-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता का जुलाई अंक पढ़कर

हृदय प्रफुल्लित हो गया। नरेन्द्र मोदी सचमुच विराट व्यक्तित्व के धनी हैं, अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर वे प्रखरतम देदीप्यमान नक्षत्र हैं, शताब्दियों पश्चात ऐसा युगपुरुष भारत को मिला है जिनसे भारतमाता को अनेक मंगलमय आशाएं व आकांक्षाएं हैं। २१ जून की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर योग दिवस की स्वीकारोक्ति नरेन्द्र मोदी की महान उपलब्धि है। देश की रक्षा सुरक्षा जन कल्याण की ओर भी यदि समुचित ध्यान दें तो वे प्रातःस्मरणीय महापुरुष सिद्ध होंगे। नारियों के प्रति बढ़ते अत्याचारों पर नियंत्रण करना एक बड़ी चुनौती है जिसके लिए सुशासन द्वारा काबू किया जा सकता है। 'काव्यायन' में डा.वशिष्ठ अनूप तथा गौरीशंकर वैश्य विनम्र की बेटियों के प्रति भावपूर्ण समसामयिक रचनाएं अच्छी लगीं। सम्पादकीय द्वारा ज्ञात हुआ कि सोमनाथ मन्दिर में गैर हिन्दुओं का प्रवेश वर्जित है। यह हिन्दू पुजारियों की संकीर्ण सोच का प्रदर्शन है अन्यथा कभी महिलाओं का प्रवेश निषिद्ध, कभी अछूतों का प्रतिबंध और कभी गैर हिन्दुओं पर रोक। ईश्वर के यहां मानव मानव में भेद कहाँ। यदि सुरक्षा का खतरा है तो सुरक्षा प्रबन्ध कड़े किए जाएं। यह दूषित मनोवृत्तियां ही देश के विकास में बाधक हैं। इसके समाधान के बिना देश का कल्याण नहीं होगा। शुभाकांक्षा में विद्वान पाठकों के विचार अत्यंत उपयोगी होते हैं। ऐसी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता किसी अन्य पत्र में नहीं मिलती। आपके विद्वत्तापूर्ण सम्पादन को शतशः नमन करती हूँ।

-सविता वार्णी

गौरीगंज चौक, अमेठी जनपद(उ.प्र.)

***

आर्य लोक वार्ता अगस्त अंक

साभार प्राप्त हुआ। इसके अठारहवें वर्ष में प्रवेश के सुमंगल अवसर पर स्वस्ति वाचन स्वीकार करें। इसका गरिमापूर्ण सतत प्रकाशन आपकी सात्विक श्रमसाधना का प्रतिफल है। शुभकामनाएं।

आर्य लोक वार्ता तरुण को लगा अठारहवां वर्ष,
वैदिक अमृत पुत्र राष्ट्र में लाए अभिनव हर्ष।
आर्य-संस्कृति से जन-जन उर को कर दे अनुप्राणित
ओम ध्वजा वाले स्वामी का रुके नहीं संघर्ष।।

अग्रलेख में श्री शिवकर बापू तलवटे जी के प्रथम विमान आविष्कार की जानकारी आह्लादित करती है किन्तु आविष्कार को श्रेय न मिलना दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसा विज्ञान के अन्य क्षेत्रों में हुए आविष्कारों के विषय में भी सत्य घोषित किया जाता है किन्तु जंगल में मोर नाचा किसने देखा? हम भारतवासी प्रचार प्रसार प्रदर्शन में पीछे रह जाते हैं। आर्ष ग्रन्थों की अब भी विद्वानों द्वारा शोधपूर्ण अनुशीलन की आवश्यकता है। 'वेद प्रवचन' में 'संसार को आर्य कैसे बनाएं' सुचिन्तन पूर्ण विवेचन है। 'जिज्ञासा और समाधान' महत्त्वपूर्ण स्तम्भ है जिसमें वेदसम्मत सत्यज्ञान प्राप्त होता है। 'काव्यायन' में 'स्वतंत्रता दिया' (गोपाल सिंह नेपाली) समसामयिक रचना प्रेरणा प्रद लगी। अन्य कविताओं में श्री महेश चन्द्र द्विवेदी, डॉ.कैलाश निगम, कृष्णा बजाज, आभा मिश्र आदि की प्रस्तुतियां रुचिकर रहीं। हिन्दी पर्व के परिप्रेक्ष्य में विनम्र शुभकामनाएं-

आया सितम्बर मास हिन्दी की सलोनी छवि लिए
विश्व की भाष बनेगी ज्ञान का नव रवि लिए।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

११७, आदिलनगर, लखनऊ -२२६०२२

***

आर्य लोक वार्ता अगस्त अंक प्राप्त हुआ। प्रथम पृष्ठ पर यह जानकर अत्यंत गौरवान्वित हुई कि प्रथम विमान उड़ाने वाले वे भारतीय रत्न ही थे श्री शिवकर बापू तलपटे जी। और ऐसे न जाने कितने रत्न हमारे भारत में होंगे। 'सम्पादकीय' में नरेन्द्र मोदी अवश्य ही ईश्वरीय देन हैं क्योंकि जब जब संकट की घड़ियां आती हैं तब तब प्रभु स्वयं किसी ऐसे महामानव को रक्षा हेतु भेज देते हैं। परम पिता परमात्मा हमारे हृदयों में बैठे हुये हैं और अवश्य रक्षा करते हैं। अतः नरेन्द्र मोदी पुण्यात्मा पुरुष हैं और ईश्वर ने देश की बागडोर उनके हाथों में दी है। अतः कुछ समय प्रतीक्षा तो करनी पड़ेगी हर काम में समय तो

लगता ही है। 'वेद प्रवचन' में शिवकुमार शास्त्री का प्रवचन 'संसार को आर्य कैसे बनाएं' बहुत ही शिक्षा प्रद और अनुकरणीय है। 'मनुष्य का विराट रूप' श्री आनन्द कुमार जी का बड़ा ही मनोवैज्ञानिक लेख है। 'अनन्त की खोज' व्याख्यानमाला बहुत शिक्षाप्रद खोजपूर्ण है। उन्होंने अपने विचारों को सुन्दर दृष्टांत द्वारा बताने का सुन्दर प्रयास किया है। हम सांसारिक मोह में न भटक जायें, और परम पिता की सत्य मन से नित्य निरंतर खोज प्रयत्नशील होकर करते रहें तभी जीवन की सार्थकता है नहीं तो मानव जन्म व्यर्थ है-

जनम जनम मुनि यतन कराहीं।
अंत राम कहि आवत नाहीं।।

'जिज्ञासा और समाधान' में विशेष जानकारी मिलती है। जिसका कि अत्यधिक लोगों को पता भी नहीं है उसका भी समाधान हो गया। 'काव्यायन' में सभी कविताएं उपयोगी हैं। फिर भी आत्म प्रकाश वत्रा की कविता 'जिन्दगी का सच क्या है' विशेष पसन्द आई। इसके अलावा डा.कैलाश निगम की कविता 'मंत्र फूंकें' भी अच्छी लगी। उम्मीद करती हूं कि आर्य लोक वार्ता ऐसे ही प्रगति पथ पर चलता रहे।

-प्रमोद कुमारी

सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

मई-जून २०१५ के आर्य लोक वार्ता में

आपका बहुत वीरता, कर्तव्य परायणता और देश सेवक राणा प्रताप के जीवन का वर्णन किया है। मैं यहां लिखना चाहता हूं कि अकबर कभी दिल्ली नहीं रहा। फतह पुरी सीकरी और आगरे के लाल किले से ही युद्ध राजपूतों के साथ किये थे। शायद सबसे बड़ा और अन्तिम युद्ध सीकरी से ५ किमी राजस्थान की सीमा में गांव 'रुपान्दुआ' के युद्ध मैदान में हुआ था। जहां पर आज भी अनगिनत राजपूत राजाओं की छतरिमा और समाधि बनी हुई है। मुगलों की भी सैकड़ों कब्रें थीं जिन्हें अधिकतर स्वतंत्रता के बाद फोड़कर मकान बना लिये गये हैं।

राणा प्रताप भाले से वार करते थे। उनके हाथ में सदैव भाला रहा है। यह भाला और वह कवच जिसका वजन ५० किलो लगभग होगा आज भी उदयपुर के महल के म्यूजियम में सुरक्षित है जिसे देखकर लगता है कि राणा प्रताप का सीना छप्पन नहीं छियासठ इंच का रहा होगा। पुनः चित्तौड़ किले के मुख्य द्वार अष्टधातु के थे, जिन्हें अकबर आगरा ले आया था और जामा मस्जिद पर लगवा दिये थे। काल के परिवर्तन पर भरतपुर के जाटों ने आगरे का लालकिला जीता तब यह दरवाजा जामा मस्जिद से उतार कर भरतपुर लाकर किले पर लगा दिये थे जो आज भी पुलिस की निगरानी में सुरक्षित हैं।

आगरे में अकबर का मकबरा है जिसपर भारत सरकार का आलेख लगा है कि इस मकबरे को भरतपुर के जाट राजा ने तोड़कर कंकाल निकाल कर यमुना किनारे जलवा दिया था। लार्ड करजन ने इसका पुनःनिर्माण करवाया है।

-डॉ.विनय कुमार मिश्र

पूर्व संयुक्त निदेशक, राजस्थान सरकार,

४२ श्याम कालोनी, वैशाली नगर, अजमेर-३०५००१

***

धारावाहिक-(56)

मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

किसी भी प्रकार के भौतिक सुख और ऐश्वर्य में अत्यधिक आसक्त होने से उसके छिन जाने का भय होता है।

(घ) पाप : -प्रत्येक पाप चाहे वह मानसिक हो या शारीरिक, अपराधी के सामने प्रेतवत् प्रकट होकर उसे भयभीत करता है। बुरे विचारों के साथ ही नाना शंकायें स्वतः मन में उठने लगती हैं। ईर्ष्या-द्वेष वाले बिना अपराध के भी दूसरों से डरते हैं, शंका करते हैं। उनकी दुर्भावनायें उन्हें सत्त्वहीन बना देती हैं। इसी से प्रकट होता है कि पाप कितना भयंकर है।

जो लोग पाप करते हैं, उनकी मनोदशा पर ध्यान दीजिए। उन्हें अपने पाप की छाप बाहर दिखाई पड़ती है। भ्रष्टाचार या पुण्य के नाम पर पाप करने वाले नित्य शंकित रहते हैं कि कहीं पोल न खुल जाय, कहीं फँस न जायें। उन्हें किसी धर्मात्मा या अधिकारी से नहीं, बल्कि अपने पाप से भय लगता है। भीतर का पाप उन्हें डराता है। अन्यायी, अत्याचारी अपने अनाचार की प्रतिक्रिया से डरता है। उसे यह भय रहता है कि जिसका अहित किया है, वह बदला न ले अथवा अपराध का दंड न भोगना पड़े। उसे स्वप्न में भी व्यग्रता रहती है। दुराचारी, चोर-बदमाश, धूर्त, झूठे, स्वेच्छाचारी कभी साहसी नहीं होते क्योंकि उनका नैतिक पतन हो जाता है। उनका दुस्साहस उन्हें कायर बना देता है। उनके अपकार के साथ ही प्रत्यपकार का भय चिपका रहता है। 'चरन धरत संका करत'।

(ङ) शक्ति-हीनता : -शक्ति-हीनता, चाहे वह नैतिक हो या मानसिक अथवा शारीरिक, भय उत्पन्न करती है। इका एक सीधा प्रमाण यही है कि शक्ति-हीन व्यक्ति विवश होकर बलवान् की इच्छा का सम्मान करता है। उसकी निर्बलता उसे सिर नहीं उठाने देती।

नैतिक दुर्बलता के सम्बन्ध में ऊपर कुछ संकेत किया जा चुका है। अब मानसिक निर्बलता के दुष्प्रभाव पर विचार कीजिए। मन जब विषयासक्ति, भावुकता, चंचलता, असहिष्णुता या अन्य किसी कारण से निर्बल हो जाता है, तब कठिनाइयों की कल्पना से भी भय लगता है। उस अवस्था में लोग निरपराध होते हुए भी डरते हैं कि कहीं कुछ हो न जाय, कहीं कोइ विपत्ति न टूट पड़े। मानसिक सुकुमारता में बाह्य परिस्थितियाँ बड़ी भारी लगती हैं, साधारण दुःख से भी अनष्टि-शंका होती है।

शरीरी की निर्बलता में भय कितना व्यापक हो जाता है, इसे किसी बीमार से पूछिए। वह हवा से डरता है, पानी से डरता है, अपने शरीर से भी डरता है कि कहीं वह धोखा न दे जाय। जिसकी पाचन-शक्ति निर्बल होती है, उसे स्वादिष्ट भोजन में भी अजीर्ण का भय दिखाई पड़ता है। स्नायविक विकारों से पीड़ित व्यक्ति छोटी-छोटी बातों से भी चिन्तित हो जाता है। शारीरिक निर्बलता में रोग-शोक का भय लगा ही रहता है। अयोग्यता और सामर्थ्य-हीनता के कारण मनुष्य का भयभीत होना स्वाभाविक है क्योंकि संघर्षमय जीवन में इनसे पराभव की आशंका होती है।

सहायक-बल भी साधारण मनुष्य का एक बड़ा भारी बल है। उसकी क्षीणता भयकारक है। कोई जब साथ रहता है तो बाहरी संकटों से भय नहीं लगता, परन्तु अकेला होने पर तो अपना घर ही फाड़ खाता है। निस्सहायावस्था में इस प्रकार की शंकाएँ स्वतः उठती हैं- कोई अपना नहीं है, समय पर कौन काम आयेगा, चार आदमी मिलकर हमें लूट लें तो कोई बोलने वाला नहीं है, हमारी कोई भी वस्तु सुरक्षित नहीं है, आदि-आदि। स्त्री, बन्धु-बान्धव और मित्र आदि की बात तो जाने दीजिए, कामकाजी नौकर भी जब छोडकर चला जाता है तो काम के बिगड़ने की शंका होती है।

(च) अकर्मण्यता : -आलस्य और भय का परस्पर बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। अकर्मण्यता के साथ निर्धनता एवं भावी असफलता की आशंका अनिवार्य है। आलसी व्यक्ति तो अपने काम से भी डरता है। दुर्भाग्य का भय सबसे अधिक उसी को होता है। एक न एक अशुभ चिन्ता उसे दिन-रात घेरे ही रहती है।

सारांश यह है कि 'संसार में सहस्रो शोक के स्थान हैं और सैकड़ों भय के हैं, परन्तु ये प्रतिदिन मूर्ख को प्राप्त होते हैं, पण्डित को नहीं'।-

शोकस्थानसहस्राणि भसस्थनशतानि च।
दिवसे-दिवसे मूढ़माविशन्ति न पण्डितम्।।

-महाभारत

हमें अब यह देखना चाहिए कि बुद्धिमान् लोग किन-किन स्वाभाविक साधनों की सहायता से भय-शंका का निवारण या उपचार करते हैं।

६-भय का उपचार

(क) आत्मशुद्धि : -आत्मशुद्धि भय की अमोघ औषधि है। दुर्भावनाओं का दमन सद्भावनाओं से ही होता है। यदि अपनी प्रकृति ठीक रहे तो अप्राकृतिक वृत्तियाँ स्वतः निर्मूल हो जायँगी। कौटिल्य का मत है कि जो स्वयं अशुद्ध है, वह दूसरों के प्रति शंका करता है- 'स्वयं अशुद्धः परानाशंकते'। शुद्धात्मा को भय नहीं सताता। मनुष्य को आत्मनाशक वासनाओं से मुक्त होकर स्वभाव से और चरित्र से पवित्र होना चाहिए।

(ख) मनस्विता : -संख्या-बल और स्थान-बल के भरोसे कोई व्यक्ति निर्भय और निश्चिन्त नहीं हो सकता। युधिष्ठिर के पास रक्षकों की कमी नहीं थी; स्वयं भगवान कृष्ण उनके सहायक थे। फिर भी वह दिन-रात दूसरों के आगे गिड़गिड़ाता ही रहता था। उसकी निर्मनस्विता ने उसे त्राहिवादी और दीन बना दिया था। कोई उसे खदेड़ता नहीं था, फिर भी वह यह सोचकर चौंकता और भागता था कि सब उसके पीछे पड़े है।

मनुष्य को स्वाभिमानी, स्वावलम्बी और प्रगल्भ होना चाहिए। बलवान् हृदय किसी भी परिस्थिति में परास्त नहीं होता। उससे भय उसी प्रकार दूर रहता है जैसे धूप से जाड़ा। मन से मेमना होने पर भय के भेड़ियों से मुक्ति कैसे मिलेगी।

(ग) श्रद्धा-विश्वास : -श्रद्धा-विश्वास में भय को नष्ट करने की अद्भुत शक्ति है। मनुष्य जिस समय विषम स्थिति में श्रद्धापूर्वक ईश्वर का ध्यान करता है, वह सचमुच निर्भय हो जाता है। उस समय निस्सहायतावस्था का भय नहीं रहता क्योंकि उसे अनुभव होता है कि ईश्वर साथी है। श्रद्धा-विश्वासपूर्वक भगवान् का नाम लेने से ही बहुत से भवभय नष्ट हो जाते हैं। तभी तो गाँधी जी राम-नाम को अभय का मंत्र मानते थे।

(मनुष्य का विराट रूप से जारी क्रमश:)

व्याख्यान माला (15)

अनन्त की खोज

-महात्मा आनन्द गिरि-

अन्धकार को केवल अग्नि का प्रकाश ही मिटा सकता है और किसी वस्तु से अन्धकार नहीं मिटाया जा सकता। वह अग्नि चाहे सूर्य की हो या जलती हुई लकड़ी की। अन्धकार मिटाने में केवल अग्नि ही समर्थ है। अग्नि की ऊष्मा ऊर्जा है जो गति प्रदान करती है। गति ऊर्जा से ही सम्भव है। संसार में जो भी कुछ गतिमान है, अणु से लेकर ग्रह नक्षत्र तक सब अग्नि की ऊर्जा से हैं अग्नि विश्व ब्रह्माण्ड में व्यापक है। अग्नि का तीसरा अद्भुत गुण है कि वह समीप आने वाले को अपना रूप प्रदान करती है। पत्थर को अग्नि में डालो चाहे लोहे या स्वर्ण को सब अग्नि के समान हो जाते हैं। जो भी कुछ अग्नि के समीप आएगा, वह उसे अपना रूप प्रदान करेगी। अग्नि के गुण संक्रमित होकर उसमें प्रविष्ट होंगे और उसका अपना स्वरूप छिप जाएगा। ज्ञान के भी तो यही गुण हैं। इस गुण सादृश्यता के कारण अग्नि ज्ञान अर्थ में प्रयुक्त किया गया है। अज्ञानान्धकार को केवल ज्ञान ही मिटा सकता है। कर्म शक्ति ज्ञान से प्राप्त होती है। और जो ज्ञान के समीप जाता है वह ज्ञान मय हो जाता है। संसार का प्रत्येक मनुष्य इन तीन गुणों की कामना करता है। मानव मात्र की यह चिरन्तन माँग उपनिषद् के शब्दों में 'असतो मा सद् गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय' के रूप में प्रकट की गयी है। ज्ञानोपासना में ऊँच-नीच, छोटा-बड़ा, गरीब-अमीर का कोई भेद नहीं है। जो भी कोई इनकी उपासना करता है, ज्ञानी हो जाता है। अग्नि शब्द को ज्ञानार्थ में प्रयोग करके वैदिक ऋषि ने गागर में सागर भर दिया। ज्ञान की अवधारणा अत्यन्त सूक्ष्म और अमूर्त होने से बैखरी भाषा द्वारा स्पष्ट नहीं हो सकती। इसलिए अग्नि के रूपक से वेद ने इसे सर्व साधारण के लिए सरल कर दिया।

याज्ञिको, यज्ञकुण्ड में प्रज्वलित की जाने वाली अग्नि ज्ञान का प्रतीक है। उस ज्ञान का जिसे प्रत्येक साधक को अन्तःकरण के कुंड में प्रज्वलित करना है। वेद का प्रथम सूत्र प्रकट करता है कि आर्य जीवन ज्ञान के स्तवन से प्रारम्भ होता है और इसका पर्यवसान विज्ञान में ही होता है। इसके समान मनुष्य को पवित्र करने वाली कोई अन्य वस्तु नहीं है। जैसे अग्नि मल को जलाकर प्रत्येक पदार्थ को शुद्ध कर देती है वैसे ही यह अन्तःकरण को पवित्र बना देता है- 'नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते!'

गीता में कहा गया है कि 'ज्ञान के समान पवित्र करने वाली वस्तु कोई नहीं।' ज्ञान नौका से ही भवसागर को पार किया जा सकता है। इस नौका पर बैठने को सबको समान अधिकार है। जो भी पार होना चाहते हैं उन्हें गीता ने ज्ञान की नौका पर बैठने का उपदेश किया है। पापी से बढ़कर भी पापी मनुष्य क्यों न हो ज्ञान नौका पर आरूढ़ हो गया तो संसार से पार हो जाएगा। इस नौका पर चढ़ते ही उसकी पापी संज्ञा समाप्त हो जाएगी।

अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पाप कृत्तमः।
सर्व ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि।।

'कृष्ण कहते हैं यदि तू सब पापियों से भी अधिक पाप करने वाला है तो भी ज्ञान रूप नौका द्वारा निःसंदेह सम्पूर्ण पापों से अच्छी प्रकार तर जाएगा।' वैदिक दर्शन ने मोक्ष का हेतु न कोई पीर माना है न पैगम्बर। अगर मनुष्य मुक्त हो सकता है तो केवल ज्ञान से। आपने यह प्रसिद्ध उक्ति सुनी होगी-

'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः'- ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती। यह स्पष्ट और बेलाग बात है। नीतिकारों ने भी कहा है 'ज्ञानेन हीनः पशुभिः समानः'। ज्ञान को जो महत्व पूर्ण स्थान वैदिक ऋषियों ने प्रदान किया है वह अन्यत्र दुर्लभ है। वैदिक मार्ग ज्ञान मार्ग है। समस्त वैदिक कर्मों की समाप्ति ज्ञान में है। कर्म का मूल और फल दोनों ही ज्ञान माने गये हैं। वेद से लेकर उपनिषद् तक समस्त वाङ्मय ज्ञान की चर्चा है। वेद त्रयी ज्ञान कर्म और उपासना की त्रिपुटी है। कर्म और उपासना से प्रथम ज्ञान को स्थान दिया गया है। या ऐसे भी कहा जा सकता है कि कर्मोपासना का मूल ज्ञान है। ज्ञानी पुरुष की वैदिक संज्ञा देव है। देवों की पूजा सेवासुश्रूषा यज्ञ है। देव पुरुष आप्त होते है। उनका वचन प्रमाण माना जाता है। आर्य संस्कृति को ज्ञानी ने सम्राट से भी ऊँचा स्थान दिया है। हिन्दू आचार संहिता में सम्राट के लिए आदेश है कि 'वह आते हुए ब्रह्मचारियों को देखकर स्वागत के लिए खड़ा हो जाय। अगर उसकी सवारी निकल रही हो तो पहले ब्रह्मचारियों को मार्ग दे फिर आगे बढ़े।' इस देश की जनता ने सर्वदा ज्ञानियों के चरण में ही सिर झुकाया है- चाहे वह ज्ञानी किसी भी जाति का सदस्य क्यों न रहा हो। कबीर, दादू, रैदास यद्यपि निम्न जाति से थे किन्तु उन्हें सन्तों का पद मिला तथा अन्य जाति के लोग भी उनके शिष्य बने। कहने का तात्पर्य है कि वैदिक दर्शन, मानसिक और बौद्धिक स्वतंत्रता का प्रतिपादक है। यह ज्ञान की अनन्तता को स्वीकारता है। साथ ही यह बोध भी कराता है कि 'अन्ततोगत्वा मनुष्य अल्पज्ञ है और वह अंतिम सत्य का उद्घाटन नहीं कर सकता।' ऋषिगण अपने अल्प सामर्थ्य को जानते हैं और शिष्य को मिथ्या अहम् से ग्रसित न होने का उपदेश करते हैं। कहीं यह मिथ्या धारणा कि 'मैं पूर्ण ज्ञानी हूं' शिष्य को अज्ञान में न डाल दे इसलिए गुरु कहते हैं- 'यदि मन्यसे सुवेदेति दभ्रमेवापि, नूनं त्वं वेत्थ ब्रह्मणो रूपम्। यदस्य त्वं यदस्य देवेष्वथ नु, मीमाँ स्थमेव ते मन्ये विदितम्।।

'हमारे द्वारा संकेत से बतलाए हुए तत्व को सुनकर यदि तू ऐसा मानता है कि उसको भलीभांति जान गया हूं तो निश्चित ही तूने उसके स्वरूप को बहुत थोड़ा जाना हैं उस परम सत्य का जो अंश तू है, यह समस्त देव गणों में- यानी मन, बुद्धि, प्राण, इन्द्रिय आदि में जो सत्यांश है जिनसे वे अपना अपना काम करने में समर्थ हो रहे हैं, उसको तू समग्रता समझ रहा है तो यथार्थ नहीं। ब्रह्म इतना ही नहीं है? इस जीवात्मा और समस्त विश्व ब्रह्माण्ड में व्याप्त जो ब्रह्म की शक्ति है, उन सबको मिलाकर भी देखा जाय तो वह परम तत्व का एक अंश ही है। अतः तेरा समझा हुआ यह तत्व बोध पुनः विचारणीय है ऐसा मैं मानता हूँ।' जो यह समझता है कि वह सब जानता है उपनिषद् कहता है कि वह कुछ नहीं जानता। और जिसे सतत् यह अहसास रहता है कि मैं समग्रता को कुछ भी समझ नहीं पाया हूं वह बहुत कुछ जानता है। ऋषियों ने कहीं भी ऐसा नहीं कहा कि वह जो कुछ भी कहते हैं वह पूर्ण सत्य की अभिव्यक्ति है और उनका कथ्य मीमांसनीय नहीं है। कहीं भी ऐसा नहीं कहा गया है

कि तर्क और युक्ति को प्रमाण में न लेकर आँख मींचकर चलो। वैदिक दर्शन तर्क को ऋषि कहता है। संशय और भ्रम उपस्थित होने पर तर्क के प्रयोग करने का आदेश ऋषियों ने दिया है। इस प्रकार वैदिक अध्यात्म और दर्शन का मूल ज्ञान है। यह आर्य संस्कृति को मेरुदण्ड है। आर्य सभ्यता का गठन इसकी उपलब्धि के लिए किया गया है। वैयक्तिक पारिवारिक आदर्श और सामाजिक संरचना का अक्ष ज्ञान तत्व है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में से किसी को भी समाज का आधार नहीं कहा गया है।

'वेदोऽखिलो धर्म मूलम्'

धर्म का आधार वेद है। वेद अर्थात् ज्ञान। मनु की यह उक्ति पारस्परिक व्यवहार व सामाजिक आचार संहिता का मूल ज्ञान निश्चित करती है। ऋषियों द्वारा वेद का स्वतः प्रमाणत्व वस्तुतः ज्ञान की स्वीकृति है। विद् धातु से बना वेद शब्द ज्ञानार्थक है। कहने का तात्पर्य है कि ज्ञान ही वह परम सत्ता है जिसको पाना मानव जीवन की उपादेयता है। ज्ञान के आधार पर ही मनुष्य और पशु में भेद किया जा सकता है। शरीर संरचना और यान्त्रिकी दृष्टि से तो गधे और मनुष्य में कोई भेद नहीं अगर कोई भेद है तो वह केवल बौद्धिक ही है। ज्ञान की पात्रता के लिए जिस विकसित मस्तिष्क की आवश्यकता है वह प्रकृति ने मनुष्य को प्रदान किया है। मानव मस्तिष्क की संरचना और क्रिया पद्धति सिद्ध करती है कि जीवन का परम उद्देश्य ज्ञान की संप्राप्ति है। इस महत्वपूर्ण योनि को पाकर जो मनुष्य इस लक्ष्य से भ्रष्ट हो जाते हैं सर्वत्र उनकी निन्दा की गयी है। उपनिषद् कहते हैं- 'मानव जन्म अत्यन्त दुर्लभ है। इसे पाकर जो मनुष्य परमात्मा की प्राप्ति के साधन में तत्परता के साथ नहीं लग जाता, वह बहुत बड़ी भूल करता है। अतएव श्रुति कहती है जब तक यह दुर्लभ मानव शरीर विद्यमान है, भगवत्कृपा से प्राप्त साधन सामग्री उपलब्ध है, तभी तक शीघ्र परमात्मा को जान लिया जाय तो सब प्रकार से कुशल है, मानव जन्म की परम सार्थकता है। यदि यह अवसर हाथ से निकल गया तो फिर महान् विनाश हो जाएगा- बार बार मृत्यु रूप संसार के प्रवाह में बहना पड़ेगा। फिर रो-रोकर पश्चाताप करने के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं रह जायगा। संसार के त्रिविध तापों और विविध शूलों से बचने का यही एक परम साधन है कि जीव मानव जन्म में दक्षता के साथ साधन परायण होकर अपने जीवन को सदा के लिए सार्थक कर ले। मनुष्य जन्म के सिवा जितनी और योनियाँ हैं सभी केवल कर्मों के फल भोगने के लिए ही मिलती हैं। उनमें जीव परमात्मा को प्राप्त करने का कोई साधन नहीं कर सकता। बुद्धिमान पुरुष इस बात को समझ लेते हैं और इसी से वे प्रत्येक जाति के प्रत्येक प्राणी में परमात्मा का साक्षात्कार करते हुए सदा के लिए जन्म मृत्यु के चक्र से छूटकर अमर हो जाते हैं। *(क्रमशः)*

काव्यायन

जयति जयति हे !

❑आभा मिश्रा

जयति-जयति हे भारत माता।
रत्न प्रसविनी शुभ वर दाता।।

हिम-किरीट से शशि मुखमण्डित,
हरित-दुकूल, हर्ष रंग रंजित।
प्रभा पुंज अविचल ज्योतिर्मय,
धन-वैभव विभूति नव संचित।
शुभदा-सुखदा भारत माता।

तेरे अंक भरे किलकारी,
यमुना, ब्रह्मपुत्र, गोदावरि।
सतलज, झेलम, व्यास, शारदा,
सरस्वती, कावेरी, सुरसरि।
शस्य-श्यामला भारत माता।

पद-पंकज प्रक्षालित करता,
नीलवर्ण शुचि सुन्दर सागर।
तेरा वक्षस्थल है जननी,
दिव्य नवल मणियों का आकर।
पालक-पोषक भारत माता।

–लोकमान्य विद्या मंदिर, लकड़मण्डी, सआदतगंज, लखनऊ

रही पुकार हिन्दी है

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

भारत की वाणी दिव्य भावों की स्रोतस्विनी है,
प्राची के प्रकाश का प्रवेश-द्वार हिन्दी है।
सहज-सरल बोधगम्य, मृदु ममता-सी,
जन-जन प्रिय बनी कण्ठहार हिन्दी है।
तकनीकी ज्ञान का पयोधि तरने के लिए,
आर्य भाषा की तरणि पतवार हिन्दी है।
एकमेव लक्ष्य यही, मिले विश्वभाषा पद,
जागो राष्ट्र साधको! रही पुकार हिन्दी है।

मॉरीशस में बना विश्व हिन्दी सचिवालय,
हिन्दी का सुफलित विजय अभियान है।
विश्व हिन्दी दिवस मनाते दस जनवरी,
हिन्दी-रथ गर्व से सतत गतिमान है।
भूमण्डलीकृत्य कृत हुई हिन्दी की सुयश कीर्ति,
सरल सुभाषा में सुललित विज्ञान है।
कर में तिरंगा लिए, हृदय में गंगा लिए,
साथ में सहेलियों के, गाती देशगान है।।

–117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ

प्रथम पढ़ाई बाद बिदाई

❑दयानन्द जड़िया 'अबोध'

प्रथम पढ़ाई बाद बिदाई, सबको पाठ पढ़ाना है।
सभी बालिकायें हों शिक्षित, घर-घर अलख जगाना है।

ब्रह्म-ज्ञान-मर्मज्ञ 'गार्गी' जग में पूज्या कहलायी।
कीर्ति-ध्वजा जग में 'मदालसा' ने सगर्व है लहरायी।
लीलावती-गणित-अन्वेषक, सर्व जगत ने माना है।

पढ़ी लिखी मीराबाई ने, कृष्ण भक्ति के पद गाये।
वीरांगना लक्ष्मीबाई से गोरे थे थर्राये।
पढ़लिख संतति की शिक्षा हित अब नारी को आना है।

पढ़ी लिखी नारी निज सुख-दुःख, सबको बतला पायेगी।
समझदार नारी ही सबको, राह सही दिखलायेगी।
सब समाज सुधरे इस कारण, सुतसंग सुता पढ़ाना है।

नारि-पुरुष सब की शिक्षा से, निज स्वदेश होगा आगे।
स्वकर्त्तव्य अधिकार ज्ञान से, सब समाज का दुख भागे।
अतः बालिकाओं की शिक्षा पर निज ध्यान लगाना है।।

–370/27, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ

चर्चित है तेरा नाम !

❑डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर

चर्चित तो है तेरा नाम
किन्तु दिखा कुछ करके काम।
इश्क किया जिसने निष्काम,
खूब कमाया उसने नाम।
दिखते नहीं अब वे मैख्वार,
टकराते थे कल जो जाम।
महका करते नित्य गुलाब,
टेसू दहकें सुब्हो-शाम।
काम बहुत करने हैं यार,
उम्र का भरने को है जाम।
रुक-रुक चलती जीवन-रेल,
ज्यों-ज्यों बढ़ते 'डीजल-दाम'।
नालों से जो करता मेल,
दरिया हो जाता बदनाम।
चाँद क्या आया मेरे पास,
तारे करते रस्ता जाम।
सुब्ह कली थी दिन था फूल,
शूल बनी अब 'नासिर' शाम।

–जी-02, लोरपुर रेज़ीडेन्सी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

जगन्नियन्ता

❑(श्रीमती) कृष्णा बजाज

ऊपर उठतीं पावक लपटें,
जल नीचे को बहता है।
ऐसा कृत करने को जग में
कौन नियामक कहता है।
कलह द्वेष सब मिट जाते,
मानव इच्छित फल पाता।
असत्य बने जो सत्य वहाँ,
जब दिव्य चक्षु खुल जाता।
मुक्तस्वभाव और एकरूप में,
जगत नियन्ता रहता है।
वह परम मनोहर छबीला,
इन्द्र वरुण है, सविता है।
शान्ति का भण्डार वही है
जग की बाधाएं हरता है।
तीक्ष्ण शरों से रखवाली
वह जगत् नियन्ता करता है।

–सरसिका, माडल टाउन आर्य समाज, पीलीभीत

हर्ष-पदी

वेद और पुराण

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

वेद और गैर प्रामाणिक पुराणों में भेद है स्पष्ट।
तर्ज एक है निरंकार का, जनक ओ३म् न होता कभी नष्ट।।

अनेक में एकता वेद देता, सत्य शाश्वत सनातन संवाद।
पुराणों में एक के अनेक रूप तभी कहलाते द्वैतवाद।

उस एक को जानों जिसकी, अनेक रूपों में है छाया।
उस प्राण तत्व को जानो जिसकी ब्रह्माण्ड में है व्याप्त माया।।

–अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

कालजयी काव्य

जयद्रथ वध

❑राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

"जैसा किया होगा प्रथम वैसा हुआ परिणाम है,
माधव! विदा दो बस मुझे अब, बार बार प्रणाम है।
इस भाँति मरने के लिए यद्यपि नहीं तैयार हूँ,
पर धर्म्म-बन्धन-बद्ध हूँ मैं क्या करूँ लाचार हूँ।।"

इस भाँति अर्जुन के वचन श्रीकृष्ण थे जब सुन रहे,
हँसकर जयद्रथ ने तभी ये विष-वचन उनसे कहे-

"गोविन्द! अब क्या देर है प्रण का समय जाता टला!
शुभ-कार्य्य जितना शीघ्र हो है नित्य उतना ही भला।।"

सुनकर जयद्रथ का कथन हरि को हँसी कुछ आ गई,
गम्भीर श्यामल मेघ में विद्युच्छटा-सी छा गई।
कहते हुए यों- यह न उनका भूल सकता वेश है-
"हे पार्थ! प्रण का पालन करो, देखो अभी दिन शेष है।।"

हो पूर्ण जब तक पार्थ-प्रति प्रभु का कथन ऊपर कहा,
तब तक महा अद्‌भुत हुआ यह एक कौतुक-सा अहा!
मार्तण्ड अस्ताचल निकट घन मुक्त-सा देखा गया,
है जान सकता कौन हरि का कृत्य नित्य नया-नया?

था पार्थ के हित के लिए यह खेल नटवर ने किया,
दिन शेष रहते सूर्य को था अस्त-सा दिखला दिया।
अनुकूल अवसर पर उसे फिर कर दिया यों व्यक्त है,
वह भक्तवत्सल भक्त पर रहता सदा अनुरक्त है।।

अवलोक तब हरि को उन्होंने एक बार विनोद से,
निकटस्थ शीघ्र उठा लिया गाण्डीव अति आमोद से।।
फिर पुष्प-माला युक्त मन्त्रित दिव्य द्युति से ओघ-सा।
रक्खा धनंजय ने धनुष पर बाण एक अमोघ-सा।।

क्षण भर उसे सन्धानने में वे यथा शोभित हुए,
हों भाल-नेत्र-ज्वाल हर ज्यों छोड़ते क्षोभित हुए।।
वह शर इधर गाण्डीव-गुण से भिन्न जैसे ही हुआ,
धड़ से जयद्रथ का उधर सिर छिन्न वैसे ही हुआ।।

(प्रसिद्ध खण्डकाव्य 'जयद्रथ वध' का सम्पादित अंश– साभार)

हिन्दी-दिवस पर

राष्ट्रभाषा हिन्दी

(कुंडलिया) ❑रमा आर्य 'रमा'

हिन्दी दिवस मना रहे, पखवारा सप्ताह,
अंधियारा दीपक तले, हिन्दी भरती आह।
हिन्दी भरती आह, देख यह लीपा पोती,
इंगलिश रही बटोर, हिन्द के हीरे मोती।
हुआ वर्तनी ह्रास, वर्ण की रही है बिन्दी,
'रमा' बावरी आज, हिन्द में अपने हिन्दी।।

हिन्दी ग्रहण सुयोग्य है, लेखन मालामाल।
शब्द सम्पदा गर्भ में, भाषा भाव विशाल।
भाषा भाव विशाल, सर्व भाषा की रानी,
कहते सुधी विचार, देव देवों की बानी।
यही देश-सिंगार, मातृ भारत की बिन्दी,
'रमा' सभी की शान, राष्ट्रभाषा है हिन्दी।।

–आश्रय धाम, 417/10, निवाजगंज, चौक, लखनऊ

भारत रत्न कलाम

❑राजाभइया गुप्ता 'राजाभ'

मानव कलाम जी की, सुनी जो सहज मृत्यु,
शोकाकुल देश ही नहीं, सारा जहान है।
दानव याकूब दुष्ट, की जो हुई मौत ठीक,
दुष्ट संग दुष्टता ही, विधि का विधान है।
एक के लिए दुआ है, पुनर्जन्म ले फिर से,
ऐसे सपूत पर ही, गोद को गुमान है।
दूसरे कपूत ने लजायी निज माँ की कोख,
दो जख ही मिले उसे, रहा बेईमान है।।

–616/22, बक्ता [illegible]र, सेमरा गौढ़ी, निकट विश्वनाथ पार्क, लखनऊ

राजस्थान-समाचार

अद्वितीय समाज सेवा, अनुकरणीय नेतृत्व

अर्जुनदेव चड्ढा की स्मारिका पर अजय श्रीराम का कथन

कोटा, २१ अगस्त। श्रमिकों एवं प्रबंधकों के आपसी विश्वास से ही औद्योगिक

विकास होता है। सहयोग एवं समन्वय श्रमिक तथा प्रतिष्ठान दोनों के लिए हितकारी है। उक्त विचार डीसीएम श्रीराम लिमिटेड के चेयरमैन एवं सीनियर मैनेजिंग डायरेक्टर लाला अजय श्रीराम ने श्रमिक नेता एवं वरिष्ठ समाजसेवी अर्जुनदेव चड्ढा के सेवाकार्यों पर प्रकाशित स्मारिका के अवलोकन के अवसर पर व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि कम्पनी की प्रगति केवल मालिक एवं प्रबंधन पर ही निर्भर नहीं करती अपितु श्रमिकों का सहयोग भी अपेक्षित है। जिसके लिए अर्जुनदेव चड्ढा ने एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य किया है। इन्होंने श्रमिक हितों को प्रबंधन के समक्ष प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया जिससे श्रमिक एवं प्रबंधन के बीच सुमधुर संबन्धों का विकास हुआ। *(रामप्रसाद याज्ञिक)*

डी.ए.वी. स्कूल में वृक्षारोपण कार्यक्रम

कोटा, २७ जुलाई। हम प्रकृति का लगातार दोहन कर उससे जीवनोपयोगी

पदार्थ ले रहे हैं, परन्तु पुनर्भरण कर उसे कुछ न कुछ लौटाने के प्रति इतने सजग नहीं हैं। उक्त विचार राजस्थान प्रान्त के लोकायुक्त सज्जन सिंह कोठारी ने डी.ए.वी. स्कूल तलवंडी में वृक्षारोपण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए व्यक्त किये। आर्य समाज जिला सभा कोटा एवं डीएवी स्कूल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस वृक्षारोपण कार्यक्रम में लोकायुक्त कोठारी ने स्कूल प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम, लोकल मैनेजमेंट कमेटी के सदस्य डॉ.वेद प्रकाश गुप्त, जिला सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा एवं स्कूल के ईको क्लब की अध्यापक अध्यापिकाएं व छात्र-छात्राओं द्वारा आंवला, जामुन, बादाम, रुद्राक्ष, गुलमोहर, शीशम, नीम व पीपल इत्यादि पौधों को लगाया गया। *(सरिता रंजन गौतम)*

लोकायुक्त कोठारी का अभिनन्दन समारोह

कोटा, २७ जुलाई। महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसे महापुरुषों के आगमन की

प्रतीक्षा सम्पूर्ण मानव जाति कर रही थी। उनके द्वारा वैदिक धर्म और वैदिक सभ्यता के प्रचार के साथ कुरीतियों के उन्मूलन के संबन्ध में जो विचार रखे गये, वे हमारे लिए अनमोल हैं। उनके विचारों को अपनाने से ही मानव जाति उत्कर्ष की ओर अग्रसर हो सकती है। यह बात लोकायुक्त सज्जन सिंह कोठारी ने डी.ए.वी.स्कूल कोटा में आयोजित पौधारोपण कार्यक्रम में पधारने पर आर्य समाज जिला सभा की ओर से सोमवार को डीएवी प्रांगण में आयोजित अभिनन्दन कार्यक्रम के दौरान कही। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला सभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने की तथा वरिष्ठ अतिथि डीएवी लोकल मैनेजमेंट के सदस्य डॉ.वेद प्रकाश गुप्ता थे। इस दौरान आर्य समाज जिला सभा के प्रतिनिधियों की ओर से लोकायुक्त का मंत्रोच्चार के साथ केसरिया साफा और गले में दुपट्टा पहनाकर अभिनन्दन किया गया। वहीं डीएवी कोटा की ओर से स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। *(अर्जुनदेव चड्ढा)*

लखनऊ-समाचार

'विनम्र' के जन्मदिन पर काव्य गोष्ठी

अनन्त अनुनाद साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्था द्वारा कवि गौरी

शंकर वैश्य 'विनम्र' के पैंसठवें जन्म दिन के उपलक्ष्य में २६.०७.१५ को सरस काव्य गोष्ठी उनके आदिल नगर निवास पर आयोजित की गयी जिसकी अध्यक्षता सुन्दरम संस्था के अध्यक्ष नरेन्द्र भूषण ने की। प्रख्यात आर्य चिन्तक डॉ.वेद प्रकाश आर्य (सम्पादक, आर्य लोक वार्ता) मुख्य अतिथि तथा डॉ.सुनील कुमार एवं अशोक कुमार पाण्डेय 'अशोक' विशिष्ट अतिथियों के रूप में विद्यमान थे। अतिथियों द्वारा माँ वाणी को दीपार्चन/पुष्पार्चन के पश्चात् श्रद्धार्चन किया घनानन्द पाण्डेय 'मेघ' ने। विनम्र को आगन्तुक कवियों ने जन्मदिन पर बधाई एवं शुभाशीष प्रदान किया। संस्था के अध्यक्ष मेघ, उपाध्यक्ष रवीन्द्र नाथ तिवारी तथा मंत्री सुनील वाजपेयी ने उन्हें पुष्पगुच्छ तथ स्नेहोपहार अर्पित किये। काव्य गोष्ठी में अनिल श्रीवास्तव, अशोक कुमार शुक्ल अनजान, राजाभइया गुप्ता 'राजाभ', चेतराम अज्ञानी, अशोक पाण्डेय, डा.नलिनी खन्ना, राजेन्द्र शुक्ल 'राज', सुनील कुमार वाजपेयी, गौरी शंकर 'विनम्र', हरिमोहन वाजपेयी माधव, डा. सुनील कुमार, रवीन्द्र नाथ तिवारी, कैलाश प्रकाश तिवारी पुंज, नरेन्द्र भूषण, शिवनाथ सिंह ने ललित रचनाओं से अभिसिंचित किया। डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने आर्षवचनों, रोचक संस्मरणों तथा रुचिर कविताओं से आयोजन को सार्थकता प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन कवि हरिमोहन 'माधव' ने किया। *(विनम्र)*

सीतापुर-समाचार

जन्म दिवस

वरिष्ठ आर्य नेता श्री वीरेन्द्र कुमार

आर्य 'वीरजी' के सुपौत्र सुयश निगम की वर्षगाँठ के अवसर पर १५०, नई बस्ती, सीतापुर में श्री गोपीकृष्ण आर्य, मंत्री, आर्य समाज सीतापुर ने यज्ञ सम्पन्न कराया। श्री योगेन्द्र निगम एवं श्रीमती मधु निगम के सुपुत्र सुयश के जन्म दिवस पर समस्त पारिवारिक जनों एवं अतिथियों ने शुभकामनाएँ व्यक्त कीं।

'आर्य लोक वार्ता' की हार्दिक शुभकामना-'भूयश्य शरदः शतात्'।

जागेश्वर जी नहीं रहे

हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठ कवि स्व.उमा

प्रसाद वाजपेयी 'सुजान' के कनिष्ठ पुत्र एवं सुजान साहित्य परिषद के संस्थापक श्री जागेश्वर वाजपेयी का असामयिक निधन हो गया है। जागेश्वर जी की गणना हिन्दी के श्रेष्ठ छंदकारों में की जाती है। उनके निधन से हिन्दी जगत की अपार क्षति हुई है।

संक्षिप्त समाचार

-आर्य समाज बिसवाँ, सीतापुर का वार्षिकोत्सव ३ से ५ अक्टूबर २०१५ को सोत्साह मनाया जायगा।

-आर्य समाज बिसवाँ के मंत्री श्री अजीत आर्य की पूज्या माताजी श्रीमती कमला देवी का पिछले दिनों देहावसान हो गया। हार्दिक श्रद्धांजलि!

-आर्य समाज ईसानगर जिला सीतापुर का वार्षिकोत्सव अक्टूबर के अंतिम सप्ताह में मनाने का निश्चय किया गया है। *(वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी')*

खीरी-समाचार

वार्षिक उत्सव

आर्य समाज बरबर, जि.खीरी का वार्षिक उत्सव दि. २६ से २८ अक्टूबर २०१५ तक मनाया जायगा, जिसमें आचार्य विश्वव्रत शास्त्री, लखनऊ, स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल दातागंज, बदायूँ, स्वामी महावीर आर्य सीतापुर तथा अन्य स्थानीय विद्वान् भाग लेंगे। *(रामेन्द्र आर्य)*

नोएडा-समाचार

वेद गोष्ठी

आर्ष गुरुकुल, बी-६६, से.-३३, नोएडा एवं दिल्ली संस्कृत अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में श्रावणी के उपलक्ष्य में २१ से २३ अगस्त २०१५ को त्रिदिवसीय वेद विषयक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान् डा.वेदपाल, डा.महेश विद्यालंकार, डा. धर्मेन्द्र शास्त्री, डा.नरेन्द्र वेदालंका, डा. राजकिशोर शास्त्री ने भाग लिया। इस अवसर पर २२ एवं २३ अगस्त को नव प्रविष्ट ब्रह्मचारियों का यज्ञोपवीत संस्कार एवं भजन संध्या का भी आयोजन किया गया। *(कै.अशोक गुलाटी)*

उत्तराखंड-समाचार

स्व. कमल अग्रवाल का जन्मदिवस मनाया गया

१२.०६.१५। योग शिक्षिका एवं आर्य विदुषी स्व.श्रीमती कमल अग्रवाल के

जन्म दिवस के अवसर पर इं.श्री जे.पी.अग्रवाल के संयोजकत्व में आर्य समाज मंदिर, बी.एच.ई.एल., हरिद्वार में यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य रूप से बालकों को भाग लेने का अवसर दिया गया। बच्चों को आर्ष साहित्य- विशेष कर 'वैदिक यज्ञ प्रकाश' (कमल अग्रवाल की स्मृति में प्रकाशित) पुस्तक की प्रतियाँ वितरित की गईं। श्री जे.पी.अग्रवाल द्वारा बच्चों तथा आगत जनों के स्वल्पाहार की व्यवस्था की गई।

बताते चलें कि- श्रीमती कमल उ.प्र.सिंचाई विभाग के से.नि.अभियन्ता श्री जे.पी.अग्रवाल की सहधर्मिणी थीं। लखनऊ में रहते हुए प्रति सप्ताह पारिवारिक सत्संग और यज्ञ का आयोजन आपका स्वभाव था। योगविद्या पर प्रवचन हेतु आप विद्या मंदिरों में आमंत्रित की जाती थीं।

अप्रैल २००५ में हरिद्वार आ जाने पर बच्चों के संस्कारों का कार्यक्रम जिसे आपने लखनऊ में प्रारम्भ किया था, बी.एच.ई.एल. में चलाना शुरू किया। २०११ में बच्चों के समर कैंप का सिलसिला प्रारंभ किया किन्तु विधि का विधान अपने ढंग पर चलता है- 'ज़माना बड़े गौर से सुन रहा था, तुम्हीं सो गये दास्तां कहते कहते।' ०६.०३.२०१३ को वे चिरनिद्रा में लीन हो गईं।

इं.जे.पी.अग्रवाल का कहना है-'कमल द्वारा प्रारम्भ किये गये कार्यों को पूर्ण करने का मैं अंतिम साँस तक प्रयत्न करता रहूँगा। यही मेरे जीवन का प्रयोजन है। उनकी स्मृति मुझे शक्ति व आत्मविश्वास प्रदान करती रहेगी।' पुण्य स्मृति को शत् शत् प्रणाम!

लखनऊ-समाचार

महिला उत्थान समिति काव्य गोष्ठी

लोकमान्य विद्या मन्दिर, लकड़मण्डी, सआदतगंज में माता सरस्वती के प्रांगण में महिला उत्थान समिति की अध्यक्षा आभा मिश्रा एवं श्री हरिप्रसाद मिश्र 'असीम' के संयोजकत्व में एक कवि गोष्ठी सम्पन्न हुई, जिसकी अध्यक्षता श्री रंगनाथ मिश्र 'सत्य' ने की। मुख्य अतिथि के रूप में प्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती रामा आर्य 'रमा' तथा विशिष्ट अतिथि श्रीमती विजय लक्ष्मी उपस्थित रहीं। काव्य गोष्ठी का संचालन नगर के प्रसिद्ध छन्दकार महेश पाण्डेय 'महेश' ने किया। काव्य पाठ करने वालों में सुभाष 'हुड़दंगी', अरविन्द रस्तोगी, श्रीकृष्ण द्विवेदी 'द्विजेश', डा.अशोक शर्मा, हरि प्रसाद मिश्र 'असीम', अवधेश मिश्र 'शान्तानन्द', राम प्रकाश शुक्ल 'प्रकाश', महेश पाण्डेय 'महेश', राम अधीर 'पिण्डवी', मीरा चौरसिया, देवेन्द्र मिश्र 'देवेन्द्र', भोजपुरी कवि कृष्णानन्द राय, दयानन्द जड़िया 'अबोध', साधना दीक्षित, श्रीमती विजय लक्ष्मी रस्तोगी 'नवल' तथा श्रीमती रामा आर्य 'रमा' प्रमुख रहीं। सूक्ष्म जलपान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। *(आभा मिश्रा)*

अ.भा.अगीत परिषद की मासिक कवि-गोष्ठी

अ.भा.अगीत परिषद्, लखनऊ के तत्वावधान तथा श्री पार्थो सेन के संयोजकत्व एवं वरिष्ठ साहित्यकार डॉ.रंगनाथ मिश्र 'सत्य' की अध्यक्षता में दि.०६.०९.१५ दिन रविवार को 'अगीतायन', ई-३८८५, राजाजीपुरम स्थित सभाकक्ष में मासिक कवि गोष्ठी का आयोजन सम्पन्न हुआ। गोष्ठी के मुख्य अतिथि चिन्तक/लेखक श्री रामचन्द्र शुक्ल (पूर्व जज), कवि श्री सुभाष चन्द्र श्रीवास्तव 'हुड़दंगी', डॉ.श्याम गुप्त, अनिल किशोर शुक्ल 'निडर' थे। कार्यक्रम में सर्वश्री डॉ.रंगनाथ मिश्र 'सत्य', रामचन्द्र शुक्ल, सुभाष 'हुड़दंगी', डॉ.श्याम गुप्त, अनिल किशोर शुक्ल 'निडर', धुरेन्द्र स्वरूप बिसारिया 'प्रभंजन', गिरीश चन्द्र वर्मा 'दोषी', डॉ.सुरेश प्रकाश शुक्ल, सुशील कुमार, डॉ.शिवमंगल सिंह 'मंगल', महेश पाण्डेय 'महेश', तेजनारायण श्रीवास्तव 'राही', रामबहादुर 'अधीर पिण्डवी', अवधेश मिश्र 'शान्तानन्द', उमेश चन्द्र श्रीवास्तव, मुकेशानन्द, श्रीकृष्ण द्विवेदी 'द्विजेश', डॉ.योगेश, पार्थो सेन, हर्ष ब्रह्म देव पाण्डेय 'अश्रु', टेकचन्द 'प्रेमी', मुरली मनोहर कपूर 'निर्दोष', अरविन्द रस्तोगी, आवारा नवीन, अशोक विश्वकर्मा, सत्य नारायण पाल आदि ने अपनी कविताओं, विचारों तथा उपस्थिति से कवि-गोष्ठी को सफल बनाया। *(पार्थो सेन)*

सुन्दरम काव्य गोष्ठी

०६.०९.१५। सुन्दरम संस्था की मासिक काव्य गोष्ठी संस्था के अध्यक्ष नरेन्द्र भूषण के जानकीपुरम स्थित आवास पर आयोजित हुई जिसके मुख्य अतिथि राम प्रकाश त्रिपाठी तथा विशिष्ट अतिथि सिद्धेश्वर शुक्ल क्रान्ति एवं अशोक पाण्डेय अशोक थे। गोष्ठी का आरम्भ गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' के 'बादल' गीत से हुआ जिसमें उन्होंने समाज में व्याप्त अव्यवस्था के प्रति क्षोभ व्यक्ति किया-'बादल हो तो वर्षा का भी धर्म निभाओ, तड़प रही है प्रकृति प्रेयसी, धरती प्यासी है, सूख रही है फसलें, चारों ओर उदासी है।' पर्यावरण को समर्पित कवि कृष्णानन्द राय ने 'धरती पर मचि गवा प्रदूषण' कविता सुनाई। अनिल श्रीवास्तव ने सामयिक दोहे प्रस्तुत किये-'सूखा देकर सो रहे, बारिश के भगवान, मीन पियासी जल बिना और खेते में धान'। सुनील वाजपेयी ने गजल से रसवर्षा की। रमाशंकर सिंह ने गांव से टूटते आत्मीय संबन्धों की पीड़ा व्यक्त की, के.पी.तिवारी 'पुंज' ने हिन्दी भाष का प्रशस्ति गान किया, 'हरि' ने सावन मास का उत्सव धर्मिता में कजली सुनाकर रससिक्त किया। सिद्धेश्वर शुक्ल ने कई मुक्तकों का पाठ किया, अशोक पाण्डेय ने श्रीकृष्ण, राधा और बांसुरी विषयक सरस सशक्त छंदों से मंत्रमुग्ध किया। राम प्रकाश त्रिपाठी ने अनेक कविताएं सुनाकर अभिभूत किया। नरेन्द्र भूषण ने आधुनिक ननद-भाभी की नोंकझोंक युक्त कजली से आह्लादित किया। इसके अतिरिक्त रवीन्द्र नाथ तिवारी, राजाभइया 'राजाभ', शिवनाथ सिंह, प्रेमेन्द्र श्रीवस्तव, योगेश सिंह, डॉ.नलिनी खन्ना, अखिल श्रीवास्तव 'व्यथित' ने भी सुमधुर कविताओं से रसविभोर किया। गोष्ठी का संचालन डॉ.नलिनी खन्ना ने किया। *('विनम्र')*

लखनऊ-समाचार

पतंजलि योग समिति की महिला शाखा द्वारा योग के साथ यज्ञ का समावेश

पतंजलि योग समिति (पूर्व) की महिला प्रभारी श्रीमती मीना दीक्षित विगत कई वर्षों से सायंकाल ५ से ६ बजे सोमवार से शुक्रवार तक सी.एम.एस.प्रेक्षागृह गोमती नगर मे महिलाओं को योग शिक्षण प्रदान कर रही हैं। बड़ी संख्या में योग शिक्षा से महिलाएँ आरोग्य लाभ उठाती आ रही हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रमों से प्रेरित होकर तथा योग शिक्षा प्राप्त कर रही साधिकाओं के आग्रह पर मीना जी ने योग के साथ ही दैनिक यज्ञ (अग्निहोत्र) प्रारंभ कर दिया है। इस कार्यक्रम द्वारा महिलाओं में जागृति की लहर पैदा हो गई है। योग तो वैसे भी सर्वोत्तम है किन्तु योग के साथ यज्ञ का समावेश तो स्वर्ण में सुगंध के समान है। मीना जी को इस अभियान का सर्वत्र स्वागत और सराहना हो रही है।

बताते चलें कि २१.०६.१५ अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर पतंजलि योग समिति (पूर्व) के अध्यक्ष श्री पीयूष कान्त ने केन्द्रीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में योगशिक्षा की अगवानी की थी; उसी समय मेंहदी पार्क, विनय खण्ड, गोमती नगर में आयोजित महिलाओं के योग-प्रदर्शन का नेतृत्व श्रीमती मीना दीक्षित ने किया था।

ऊर्मिला-सत्यप्रकाश जयन्ती समारोह

२३.०८.१५। आर्य समाज लालबाग, लखनऊ के भू.पू.प्रधान स्व.सत्य प्रकाश आर्य सेवक तथा श्रीमती ऊर्मिला आर्य सेवक वानप्रस्थी का जन्म दिवस संयुक्त रूप से सेवक भवन, महानगर, लखनऊ में श्री मनीष आर्य, प्रधान आर्य समाज लालबाग की अध्यक्षता में मनाया गया। ऊर्मिला जी के सुपुत्र श्री मनीष आर्य ने परिवार सहित यज्ञ में आहुतियाँ दीं तथा यज्ञ का संचालन एवं आचार्यत्व का दायित्व श्री नवनीत निगम एवं यतेन्द्र सिंह ने सँभाला। यज्ञोपरान्त श्री मनीष आर्य के संगीत निर्देशन में तैयार किये गये प्रभु भक्ति के चार भजनों का सस्वर वाद्ययंत्रों पर गायन- गायनाचार्य पं.राधेश्याम शर्मा और उनके साथियों ने प्रस्तुत किया- जिसने आध्यात्मिक भक्ति रस से सभी को सराबोर कर दिया। समारोह में पं.सन्तोष कुमार वेदालंकार, डॉ.वेद प्रकाश आर्य, रमेश चन्द्र त्रिपाठी (प्रधान, जिला सभा), प्रत्यूष रत्न पाण्डेय, प्रबोध सागर जौहरी (मंत्री, जिला सभा), योगेश मोहन, डॉ.मोहन लाल अग्रवाल, अखिलेश लखनवी, इन्द्रा शर्मा, कैलाश मडार, सत्यदेव सैनी सहित बड़ी संख्या में आर्य नर नारी मौजूद थे। विशेष आमंत्रित वैदिक विद्वान् डॉ.ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने वैदिक ज्ञान की महत्ता पर प्रेरक व्याख्यान दिया। सुरुचिपूर्ण प्रीतिभोज ने आयोजन को पूर्णता प्रदान की।

आर्य समाज आदर्शनगर- वेदप्रचार सप्ताह

आर्य समाज आदर्शनगर, आलमबाग द्वारा श्रावणी उपाकर्म तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व दि. ३ से ६ सितम्बर २०१५ तक धूमधाम से मनाया गया। इससे पूर्व ३० अगस्त से २ सितम्बर तक प्रभात फेरी निकाल कर जन जागृति उत्पन्न की गई। यज्ञ के ब्रह्मा पद पर आचार्य सन्तोष कुमार वेदालंकार को प्रतिष्ठित किया गया। नित्य प्रातःकाल एवं सायंकाल उभयसत्रों में यज्ञ, भजन, प्रवचन का कार्यक्रम अबाध गति से चलता रहा। रविवार, ६ सितम्बर को पूर्णाहुति तथा ऋषिलंगर की विशेष व्यवस्था की गई।

इस अवसर पर वेदोपदेश हेतु ऋषि उद्यान अजमेर से आचार्य सोमदेव जी एवं पं.कल्याणदेव आर्य भजनोपदेशक (रुड़की) को प्रमुख रूप से आमंत्रित किया गया था। अंतिम दिन आचार्य संतोष कुमार वेदालंकार एवं आर्य लोक वार्ता सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने भी विचार प्रस्तुत किये। विशेष आध्यात्मिक उपहार के रूप में श्री सतीश निझावन द्वारा लिखित 'भव सागर से कैसे उतरें पार' शीर्षक पत्रक का वितरण भी किया गया, जिसकी सर्वत्र सराहना की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री आत्म प्रकाश बत्रा, प्रधान आर्य समाज ने की तथा गीतात्मक संचालन श्री सतीश निझावन ने किया।

आर्य समाज राजाजीपुरम का वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज राजाजीपुरम लखनऊ की साधारण सभा का वार्षिक अधिवेशन २१ जून २०१५ को वेद मन्दिर में सम्पन्न हुआ, जिसमें चुनाव अधिकारी आचार्य वेदव्रत अवस्थी की देखरेख में वर्ष २०१५-१६ के लिए नई कार्यकारिणी का गठन हुआ तथा डा.आनन्द बरनवाल-प्रधान, श्री निरंजन सिंह-मंत्री, श्री राजीव बतरा- कोषाध्यक्ष, श्रीमती बीना उतरेजा-पुस्तकालयाध्यक्ष, श्री हरीचन्द्र बतरा-भण्डाराध्यक्ष व श्री रमाकान्त सिंह-सम्प्रेक्षक सर्व सम्मति से निर्विरोध निर्वाचित हुए। *(निरंजन सिंह, मंत्री)*

आर्य समाज इन्दिरा नगर

आर्य समाज इन्दिरा नगर, वैशाली इन्क्लेव द्वारा श्रावणी उपाकर्म तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व के संदर्भ गतें २६ अगस्त से ६ सितम्बर २०१५ तक पारिवारिक वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया। प्रतिदिन सायंकाल ५.३० से ८ बजे तक यज्ञ, भजन, प्रवचन के कार्यक्रम होते रहे। जिन परिवारों को वेद प्रचार हेतु चयनित किया गया उनके नाम इस प्रकार हैं- श्री रमेश चन्द्र त्रिपाठी (इन्दिरा नगर), आर्य समाज मन्दिर (इन्दिरा नगर), डा.वेद प्रकाश श्रीवास्तव (कमता विस्तार), आर.सी.सैंगर (हरिहर नगर), कुसुम सिंह (दयाल रेजीडेन्सी), डा.अशोक कुमार तोमर (एच.ए.एल.टाउनशिप), आर्येन्द्र कुमार जौहरी (दीपक नगर), रत्नेन्द्र कुमार जौहरी (इन्दिरा नगर), पुनीत विश्वकर्मा (कमता), सदानन्द राय (लोहिया विहार)। उपर्युक्त सभी स्थानों पर क्रमशः श्री लक्ष्मण प्रसाद आर्य, राम गोविन्द ठाकुर, डोरीलाल राजपूत एवं डा.वेद प्रकाश (इं.) के प्रवचन होते रहे। वेद प्रचार सप्ताह की अवधि में स्वाध्यायशील उपदेशकों द्वारा प्रमुख रूप से यम नियम, चरित्र निर्माण, विद्यार्थियों की जीवनचर्या, गृहस्थाश्रम, धर्म के लक्षण, वर्ण व्यवस्था, श्राद्ध-तर्पण, योगेश्वर कृष्ण विषयों पर विचार प्रकट किये गये। रविवार, ३० अगस्त को वरिष्ठ जनों का सम्मान, उपनिषद् विद्यापीठ की स्थापना के साथ ही ऋषि लंगर की भी व्यवस्था की गई। *(रामेन्द्रदेव वर्मा, प्रधान)*

आर्य समाज के इतिहास की नई सुबह

आचार्य देवव्रत हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल नियुक्त

१२ अगस्त २०१५ को हिमाचल प्रदेश के राजभवन में एक सादे-समारोह में प्रदेश के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति मंसूर अहमद मीर ने आचार्य देवव्रत को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। इससे पूर्व हिमाचल प्रदेश के मुख्य सचिव श्री जे.पी. मिश्रा ने राष्ट्रपति द्वारा जारी आचार्य देवव्रत की नियुक्ति का अधिपत्र पढ़ा। आचार्य जी ने संस्कृत में शपथ लेकर प्रदेश में एक इतिहास रच दिया।

आचार्य देवव्रत का जीवन शिक्षा, चिकित्सा और स्वास्थ्य मिशन से लम्बे समय तक जुड़ा रहा है। उनकी शिक्षा दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार से आरंभ होकर गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार), पंजाब विश्वविद्यालय रोहतक, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र में हुई, जिसके बाद उन्होंने 'ऑल इण्डिया काउंसिलिंग फॉर नेचुरोपैथी' से 'डॉक्टर ऑफ नेचुरोपैथी एण्ड योगिक साइंस' की डिग्री प्राप्त की। पैंतीस वर्षों की कठिन तपस्या से आचार्य देवव्रत जी ने स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल कुरुक्षेत्र को वैदिक और आधुनिक शिक्षा का एक राष्ट्रीय केन्द्र बना दिया। इस गुरुकुल के बच्चों ने शिक्षा, खेल और अन्य सभी क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का सिक्का जमाया है। गुरुकुल, कुरुक्षेत्र जैविक खेती, प्राकृतिक चिकित्सा तथा देसी गऊ के अनुसंधान, योग तथा अन्य संबन्धित क्षेत्रों का राष्ट्रीय संस्थान बन गया है। आचार्य जी इन सभी कार्यों को करते हुए वैदिक मूल्यों के प्रचार-प्रसार के लिए लेखन-कार्य और युवाओं में सामाजिक और नैतिक मूल्यों की चेतना उत्पन्न करने के लिए शिविरों का राष्ट्रीय स्तर पर आयोजन करते रहे हैं। हाल ही में आचार्य देवव्रत के मार्गदर्शन में अम्बाला में 'चमन वाटिका अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल' की स्थापना हुई। आयुर्वेद का पठन-पाठन, वृक्षारोपण तथा यज्ञ-चिकित्या द्वारा प्रदूषण मुक्त समाज की रचना करना आचार्य जी का प्रिय सरोकार रहा है।

जनवरी, १९५९ को हरियाणा के ग्रामीण क्षेत्र में जन्में आचार्य देवव्रत अपने बाल्यकाल से ही ऋषि दयानन्द और वेद के सच्चे अनुयायी रहे हैं। आचार्य जी की इस उपलब्धि पर उन्हें हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ!

श्यामलाल पाण्डेय स्मृति-दिवस

०६.०९.१५। मनकामेश्वर मन्दिर के सन्निकट, डालीगंज, बरौलिया में डॉ. अरविन्द नाथ पाण्डेय के आवास पर यज्ञ-सत्संग का बृहद् कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। अवसर था- जनप्रिय वैद्य श्री श्यामलाल पाण्डेय के स्मृति-दिवस का। यज्ञवेदी पर डॉ.अरविन्द, श्रीमती मीरा पाण्डेय, पं.बनवारीलाल मिश्र तथा अन्य पारिवारिक जनों की उपस्थिति में आचार्य संतोष कुमार वेदालंकार एवं डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने यज्ञीय प्रक्रिया सम्पन्न कराई। आर्य संन्यासी वीरेन्द्र परिव्राजक सरस्वती की अध्यक्षता में सत्संग सभा को संबोधित करते हुए आचार्य संतोष कुमार वेदालंकार ने धर्म के प्रमुख लक्षण 'क्षमा' के स्वरूप पर प्रकाश डाला। आपने कहा- देशद्रोही और नारी का अपमान करने वालों को कभी क्षमा नहीं करना चाहिए। डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने कहा कि आज बढ़ते हुए पापाचरण को आर्य समाज द्वारा ही दूर किया जा सकता है। सभा का संचालन पं.प्रेमशंकर शुक्ल, प्रधान आर्य समाज डालीगंज ने किया। *(आनन्द चौधरी एडवोकेट)*

प्राणायाम योग कार्यक्रम के पूरे हुए दस वर्ष

आर्य समाज, वेद मंदिर, राजाजीपुरम् द्वारा नित्य प्रातः ६ बजे से ७.३० बजे तक प्राणायाम और योग का जो कार्यक्रम १३ सितम्बर २००५ से प्रारंभ किया गया था- उसके दस वर्ष पूर्ण हो गये। इस उपलक्ष्य में १३ सितम्बर २०१५ रविवार को विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम दस वर्षों से डॉ.आनन्द वर्णवाल, प्रधान, आर्य समाज के निर्देशन में सफलतापूर्वक संचालित होता रहा।

अनुकरणीय!

हिन्दी की वरिष्ठ कवयित्री, अनेक पुस्तकों की रचयिता श्रीमती रामा आर्य 'रमा'- ४१७/१०, नेवाजगंज, चौक, लखनऊ (मो.नं.९९१९७९०२६४) ने चालू वर्ष के लिए 'आर्य लोक वार्ता' के लिए १५ सदस्यों की सहयोग राशि कार्यालय को उपलब्ध करा दी है। कवयित्री को धन्यवाद! सदस्यों के नाम इस प्रकार हैं-आभा रानी मिश्र, मीरा चौरसिया, प्रीति शर्मा, दयानंद जड़िया 'अबोध', वी.डी. कनौजिया, वी.एन.टण्डन, डॉ.मिर्जा हसन नासिर, महेश प्रसाद पाण्डेय 'महेश', अशोक कुमार पाण्डेय 'अशोक', अरविन्द रस्तोगी, पं.रामावतार शुक्ल, कर्मवीर गुप्त, श्रीशरत्न पाण्डेय 'रतन', डॉ.रंगनाथ मिश्र 'सत्य' एवं रामा आर्य 'रमा'। रमा जी के साथ अपने सभी स्वाध्यायशील सहयोगकर्त्ताओं के प्रति भी आभार प्रकट करते हैं।

–सम्पादक

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ० वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-19/838, प्रथम तल, रिंगरोड, इन्दिरानगर, लखनऊ-226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
9450500138

E-mail-
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	– 100 रु. वार्षिक
व्रती सदस्य	– 250 रु. वार्षिक
ऋत्विक सदस्य	– 1,200 रु. वार्षिक
होता सदस्य	– 2,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	– 12,000 रु.
प्रतिष्ठापक	– 50,000 रु.

सहयोग राशि निम्न बैंकों की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है–

(1) बैंक-बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 46900 1000 00651
खाते का प्रकार–बचत खाता

(2) बैंक–इलाहाबाद बैंक, ए–869, इन्दिरा नगर, लखनऊ।
IFSC - ALLAO211122
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 5022 3541 717
खाते का प्रकार–बचत खाता

प्रतिष्ठापक
श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार
डॉ. रजत बत्रा, लखनऊ

संरक्षक
श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा, राजस्थान
श्रीमती प्रमोद कुमारी, लखनऊ
श्रीमती शालिनी कुमार, लखनऊ
श्री कौशल किशोर श्रीवास्तव, लखनऊ
श्री जगदीश लाल खत्री, लखनऊ
श्रीमती कुसुम वर्मा, लखनऊ
डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक', लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री रघुनाथ सिंह आर्य, कानपुर
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई
श्री अखिल मित्र शास्त्री, लखनऊ

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-२, हिमांशु सदन, ५-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' ५३९क/२३४ हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

आर्य्य लोक वार्ता : पत्र नहीं स्वाध्याय है - एक नया अध्याय है।